

वार्षिक रिपोर्ट 2011-12

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड
लखनऊ

वार्षिक प्रतिवेदन

2011-2012

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड
लखनऊ

आवरण चित्र : बर्या (वीवर बर्ड)

छायाचित्र : श्री नीरज मिश्रा

वेब साईट: www.neerajmishra.com

प्रकाशक:

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड

पूर्वी विंग, तृतीय तल, 'ए' ब्लॉक,

पिकप भवन, गोमती नगर, लखनऊ

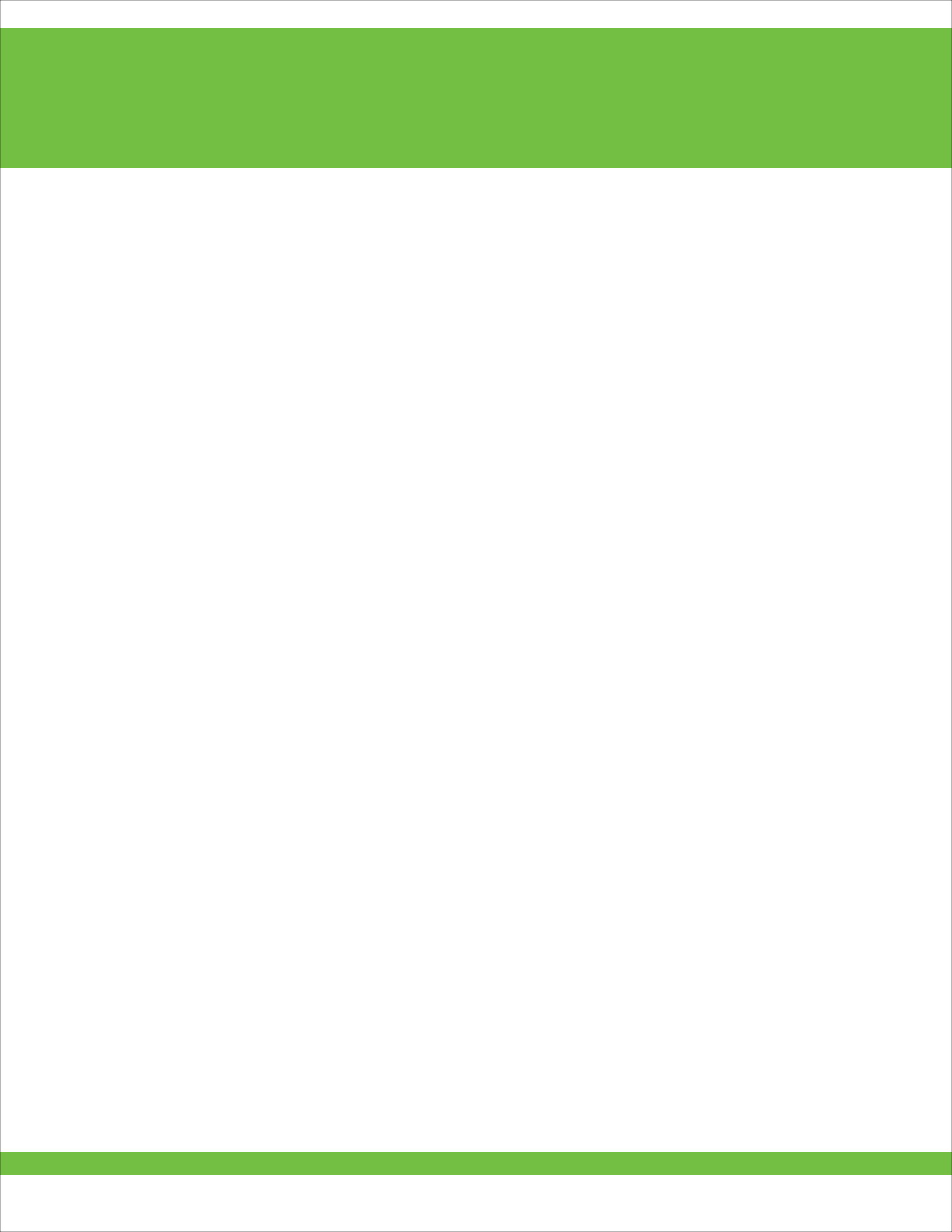
फोन: 0522-4006746, 2306491 फैक्स: 0522-4006746

वेबसाईट: <http://www.upsbdb.org>

ईमेल: upstatebiodiversityboard@gmail.com

विषय सूची

1. प्राक्कथन	1
2. बोर्ड की बैठकें	4
3. जैवविविधता प्रबंधन समितियाँ	6
4. जन जैवविविधता पंजी (पी.बी.आर.)	7
5. परियोजनाएं	8
6. अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस 2011	27
7. जागरूकता कार्यक्रम	33
i. पृथ्वी दिवस – 20 अप्रैल, 2011	33
ii. विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून, 2011	33
iii. विश्व वेटलैण्ड दिवस – 02 फरवरी, 2012	34
iv. लीप दिवस – 29 फरवरी, 2012	36
v. विश्व गौरेया दिवस – 20 मार्च, 2012	39
8. मानव संसाधन विकास	41
9. प्रकाशन	43
10. वित्त एवं लेखा	45
11. समाचार पत्रों से	50



प्राक्कथन

जैव विविधता के अंतर्गत स्थलीय, सामुद्रिक एवं जलीय पारिस्थितिकी तंत्र (इकोसिस्टम) को सम्मिलित करते हुए पृथ्वी पर स्थित सभी प्रकार के जीवधारी समाहित है। इसके अधीन तीन स्तरों पर विविधता सम्मिलित है : आनुवंशिक (जेनेटिक) विविधता (प्रजातियों के अंतर्गत), प्रजातीय (स्पीशीज़) विविधता (प्रजातियों के मध्य) और पारिस्थितिकीय (इकोसिस्टम) विविधता (इकोसिस्टम के मध्य)।

मानव जाति की जीवितता और कल्याण के लिए जैवविविधता अनिवार्य है। समस्त विकासपरक गतिविधियों का यह मूल है क्योंकि यह खाद्य, चारा, औषधियां, जल, शुद्ध वायु तथा अन्य सामग्री एवं सेवाएं उपलब्ध कराता है।

उत्तर प्रदेश एक विहंगम दृष्टि

यह देश का (क्षेत्रवार) चौथा सबसे बड़ा तथा सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला प्रदेश है। देश के कुल क्षेत्र में 3.7 प्रतिशत पर क्षेत्र पर उत्तर प्रदेश की 16.49 प्रतिशत मानव जनसंख्या और लगभग 12 प्रतिशत पशुधन संख्या का निर्वाह करता है। राज्य में जनसंख्या का घनत्व 828 व्यक्ति प्रति वर्ग कि०मी० है।

कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय है। गंगा, यमुना, रामगंगा, गोमती, घाघरा, गंडक, चंबल, बेतवा, केन, सोन आदि अनेक नदियों के द्वारा प्रदेश में पर्याप्त जल प्रवाह उपलब्ध है।

यहां कुल वन/वृक्ष आच्छादन 21,720 वर्ग कि०मी० क्षेत्र में फैला हुआ है जो कि राज्य के एकल भौगोलिक क्षेत्र का 9.01 प्रतिशत है। अभिलिखित वन क्षेत्र 16,583 वर्ग कि०मी० है जो कि राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 6.88 प्रतिशत है। राज्य में एक राष्ट्रीय वनोद्यान तथा 24 वन्य-जीव अभयारण्य है। रिमोट सेंसिंग एप्लिकेशन सेंटर के नीवनतम आंकड़े दर्शाते हैं कि उ०प्र० में 11,45,178 हेक्टेयर क्षेत्र की आर्द्रभूमि (वेटलैण्ड) है (कुल भौगोलिक क्षेत्र का 4.8 प्रतिशत)।

पादपों की लगभग 2881 प्रजातियां उ०प्र० में अभिलिखित हैं जो भारतवर्ष की कुल प्रजातियों का 6.34 प्रतिशत है। नेशनल ब्यूरो आफ फिश जेनेटिक रिसोर्स ने उ०प्र० में 20 नदियों से लगभग 115 प्रजाति की मछलियों को रिकार्ड किया है। इनमें से 109 स्वदेशी मछलियां हैं तथा 06 विदेशागत मछलियां हैं।

जैवविविधता अधिनियम, 2002

जैवविविधता अधिनियम, 2002 (अधि० संख्या 18 सन 2003) पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 05 फरवरी, 2003 को अधिनियमित किया गया था। इस अधिनियम में जैवविविधता के संरक्षण, उसके संघटकों का संभाल कर उपयोग करने तथा जैविक संसाधनों के उपयोग से प्रोद्भूत लाभों का पक्षपात रहित एवं साम्यपूर्ण हिस्सेदारी, और उससे संबंधित या आनुषंगिक मामलों के लिए व्यवस्था की गई है। अधिनियम 12 अध्यायों तथा 65 धाराओं में विभक्त हैं

भारतीय जैवविविधता एवं उसके संरक्षण पर प्रभुसत्तात्मक अधिकार, दुर्विनियोजन से बचाव, पहुँच का विनियमन तथा जैवविविधता का संभाल कर उपयोग करने और संबंधित ज्ञान के लिए यह अधिनियम एक विधिक क्रियाविधि उपलब्ध कराता है।

जैवविविधता नियमावली दिनांक 15 अप्रैल, 2004 को प्रख्यापित की गई थी।

अधिनियम की धारा 22 के अनुसार राज्य जैवविविधता बोर्ड के कृत्यों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं:

- केन्द्र सरकार द्वारा निर्गत दिशानिर्देशों के अधीन रहते हुए, राज्य सरकारों को, जैवविविधता के संरक्षण, उसके संघटकों का संभाल कर उपयोग करना तथा जैविक संसाधनों के उपभोग से प्राप्त लाभों का साम्यपूर्ण बंटवारा से सम्बन्धित मामलों पर सलाह देना।
- भारतीयों द्वारा जैव सर्वेक्षण या वाणिज्यिक उपभोग और किन्हीं जैविक संसाधनों के जैव-उपभोग के लिए अन्यथा निवेदनों या अनुमोदन प्रदान कर के विनियमन करना।
- ऐसे अन्य कृत्यों का सम्पादन करना जो इस अधिनियम के उपबंधों के कार्यान्वयन हेतु आवश्यक हों या राज्य सरकार द्वारा विहित किये जायें।

बोर्ड का गठन

जैवविविधता अधिनियम की धारा-22 के अनुसार प्रत्येक राज्य में एक राज्य जैवविविधता बोर्ड की स्थापना की जाएगी। तदनुसार उ०प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड की स्थापना शासनादेश संख्या 1498 / 14-5-2006-57 / 2006, दिनांक 20 सितम्बर, 2006 के द्वारा की गई।

बोर्ड में निम्नलिखित सदस्य हैं :-

1.	प्रमुख सचिव, वन विभाग, उत्तर प्रदेश शासन	अध्यक्ष
2.	प्रमुख सचिव / सचिव, पर्यावरण विभाग, उत्तर प्रदेश शासन का नाम निर्देशिती	सदस्य
3.	प्रमुख सचिव / सचिव, उद्यान विभाग, उत्तर प्रदेश शासन का नाम निर्देशिती	सदस्य
4.	प्रमुख सचिव / सचिव, कृषि विभाग / उत्तर प्रदेश शासन का नाम निर्देशिती	सदस्य
5.	प्रमुख सचिव / सचिव, पशुधन विभाग, उत्तर प्रदेश शासन का नाम निर्देशिती	सदस्य
6.	प्रमुख वन संरक्षक, उत्तर प्रदेश	सदस्य
7 से 11.	पाँच विशेषज्ञ सदस्य	विशेषज्ञ सदस्यगण

जैवविविधता अधिनियम, 2002 की धारा 63 की उपधारा (1) के अधीन प्रदत्त शक्तियों के अनुसरण में अधिसूचना संख्या 570/चौदह-5-2010-57/2006 दिनांक 09 अप्रैल, 2010 के द्वारा उ०प्र० राज्य जैवविविधता नियमावली, 2010 बनाई गई थी। उ०प्र० राज्य जैवविविधता नियमावली, 2010 के नियम 19(3) के अधीन बोर्ड अपनी वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा और राज्य सरकार उसे विधान मंडल के समक्ष प्रस्तुत करेगी।

बोर्ड की बैठकें

बोर्ड की छठी बैठक

प्रतिवेदनाधीन अवधि के दौरान बोर्ड की एक बैठक 05 दिसम्बर, 2011 को आयोजित की गयी। इस बैठक में पूर्व की बैठकों में दिये गये निर्देशों पर कृत कार्यवाही पर की गयी प्रगति पर चर्चा के पहले पूर्व की बैठकों का कार्यवृत्त अनुमोदित किया गया। इसके अतिरिक्त बोर्ड के विभिन्न क्रियाकलापों की प्रगति पर श्रीमती प्रतिभा सिंह, उप वन संरक्षक द्वारा एक समीक्षा प्रस्तुत की गयी।

बोर्ड की छठी बैठक में निम्नलिखित निर्णय लिए गए :

1. वार्षिक रिपोर्ट 2010-11 के ड्राफ्ट का अनुमोदन।
2. 2010-11 की लेखा परीक्षित रिपोर्ट बोर्ड के समक्ष प्रस्तुत की गयी।
3. बोर्ड द्वारा वर्ष 2011-12 के लिए बजट और अनुमानित व्यय का अनुमोदन।
4. 30 सितम्बर 2012 तक बोर्ड के व्यय का अनुमोदन।
5. 2011-12 के लिए प्रस्तावित बजट का अनुमोदन।
6. पुस्तक "कन्जरवेशन ऑफ पोटेन्शियल वेटलैण्ड्स इन डिस्ट्रिक्ट सीतापुर-ए फर्स्ट हैन्ड इम्प्रेशन" की 1000 प्रतियां बनाए जाने का अनुमोदन बोर्ड द्वारा किया गया।
7. अपेक्षित अनुमति/दिए गए अनुमोदन

एक- जैवविविधता अधिनियम की धारा 6 और जैवविविधता नियमावली 2004 के नियम 18 के अधीन भारतीय रासायनिक जीव विज्ञान संस्थान, कलकत्ता के डॉ० नाहिद अली ने शोध के लिए *लिशमानिया डोनोवानी-स्ट्रेन ए जी 83* के स्ट्रेन से ग्रस्त लोगों के रक्त के प्रयोग की अनुमति एन०बी०ए० से मांगी थी। एन०बी०ए० ने इसकी सहमति यू०पी०एस०बी०बी० से मांगी थी जिसे प्रदान कर दिया गया।

दो- जैवविविधता अधिनियम, 2002 की धारा 41 (2) के अधीन सी०एस०आई०आर० के डॉ० आर० के० गुप्ता ने *ट्राइबुलस टेरेस्टिस, फाइलैथस एम्बिलका, जिन्जीबर आफिसिनेबल* और *टाइनोस्पोरा कार्डिफोलिया* के अनुसंधान हेतु एन०बी०आर०आई० परिसर से एकत्र किए गए वनस्पति पदार्थों के प्रयोग की अनुमति मांगी थी। एन०बी०ए० ने इसके लिए यू०पी०एस०बी०बी० से सहमति मांगी थी जिसे प्रदान कर दिया गया।

तीन- जैवविविधता अधिनियम, 2002 की धारा 3 और जैवविविधता नियमावली, 2004 के नियम 14 के अधीन वनस्पति और जन्तु विज्ञान, मटिलैण्ड, दक्षिण अफ्रीका के डॉ० सेसिले बर्थोली-सालाजार ने एन०बी०ए० से मैना (*एक्रीडोथरस ट्रिस्टिस*) के पंखों के संग्रहण और प्रयोग की अनुमति मांगी थी। इसके लिए एन०बी०ए० ने यू०पी०एस०बी०बी० से सहमति की अपेक्षा की। चूंकि यह पक्षी वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के अधीन एक अनुसूचित (अनुसूची 4) पक्षी

है, अतः अनुमति प्रदान किए जाने से पूर्व वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की धारा 12 के अधीन उत्तर प्रदेश के मुख्य वन संरक्षक से अनुमति की आवश्यकता होगी। इस तथ्य से एन०बी०ए० को संसूचित कर दिया गया।

चार—केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान (आई.सी.ए.आर.) ने प्रमुख सचिव उद्यान से *सोलेनम ट्यूबरोसम* उप प्रजाति *टुबेरोसम* की 7 ट्रांसजेनिक स्ट्रेंस—एस पी 951, एस पी 904, के बी / एस पी 951, केबी / एस पी 904, के जे / एसपी 951, के बी आर बी और के जे आर बी मोदीपुरम, मोठ कैम्पस में के क्षेत्र परीक्षण की अनुमति माँगी थी। कृषि विभाग ने इसे यू०पी०एस० बी०बी० को संदर्भित किया। मामले को राष्ट्रीय जैवविविधता प्राधिकरण को संदर्भित करने का निर्णय लिया गया।

8. उत्तर प्रदेश की जैवविविधता पर एक पुस्तिका तैयार की जानी है। सम्बन्धित विभाग (कृषि / उद्यान / मत्स्य / पशुपालन / पर्यावरण / वन) अपने अपने क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश राज्य में पायी जाने वाली जैवविविधता पर 20–25 पृष्ठों का लेख तैयार करेंगे और इसे बोर्ड कार्यालय को यथाशीघ्र प्रेषित करेंगे।

अन्य बैठकें

क. चालू परियोजनाओं की समीक्षा बैठकें

परियोजना समीक्षा समिति 14 मार्च 2012 और 24 मार्च 2012

चालू परियोजनाओं की समीक्षा की गयी और प्रधान अन्वेषकों द्वारा अपनी परियोजनाओं की प्रगति के बारे में प्रस्तुतिकरण दिया गया।

ख. पी०बी०आर० बैठक

21-22 जनवरी, 2012

शैक्षणिक संस्थाओं के साथ, उन्हें पी०बी०आर० और पी०बी०आर० के महत्व के बारे में जागरूक बनाने के लिए एक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में पी०बी०आर० तैयार किए जाने की विधि पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया तथा विस्तृत परामर्शोपरान्त इसके लिए दिशा निर्देश तैयार किये गये।

जैवविविधता प्रबन्धन समितियाँ

जैवविविधता प्रबन्धन समितियाँ (बी०एम०सी०)

जैवविविधता प्रबन्धन समितियों के कृत्यों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं;

- क— स्थानीय व्यक्तियों के परामर्श से जन जैव विविधता पंजी को (पी०बी०आर०) तैयार करना, अनुरक्षण करना तथा वैधता देना।
- ख— जैविक संसाधनों और प्रदत्त परंपरागत ज्ञान तक पहुँच वाले विवरणों के बारे में लगाए गए संग्रहण शुल्क का विवरण तथा प्राप्त लाभों का विवरण और उनके बँटवारे के तरीके के बारे में सूचना देने वाली एक पंजिका का रख रखाव करना।
- ग— राज्य जैवविविधता बोर्ड अथवा अनुमोदन प्रदान करने वाले प्राधिकरण द्वारा इसे संदर्भित किए गये किसी मामले पर सलाह देना, जैविक संसाधनों का उपयोग करने वाले स्थानीय वैद्यों और व्यवसायियों के बारे में आँकड़े का रख रखाव करना।

जैवविविधता अधिनियम, 2002 के दिशा निर्देशों के अनुसार और उत्तर प्रदेश जैवविविधता नियमावली, 2010 के नियम 21 के अनुसार 5 अप्रैल 2011 को गाँव में आयोजित एक बैठक में एक जैवविविधता प्रबन्धन समिति का गठन ग्राम भौवापार, जिला गोरखपुर में किया गया। समिति का विवरण निम्नलिखित है:

भौवापार जिला गोरखपुर की जैवविविधता प्रबन्धन समिति का गठन 5-4-11 को उक्त गाँव की एक बैठक में जैवविविधता अधिनियम, 2002 और उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता नियमावली, 2010 के दिशा निर्देशों के अनुसार किया गया। समिति का गठन निम्न प्रकार था :

1. सभापति	श्रीमती विमला देवी	5. सदस्य	श्री शाम्भवी नन्दन पाण्डेय
2. सदस्य	श्री रवीन्द्र सिंह	6. सदस्य (अनु०जा०/ जनजाति)	श्रीमती सुनीता देवी
3. सदस्य	श्री कन्हैयालाल गुप्ता		
4. सदस्य	श्री आशुतोष शुक्ला	7. सदस्य (महिला प्रतिनिधि)	श्रीमती मिथिलेश देवी

यह चौथी जैवविविधता प्रबन्धन समिति है, जिसका गठन राज्य में किया गया है, अन्य समितियाँ हैं

कृषि जलवायु क्षेत्र	जिले का नाम	खण्ड का नाम	ग्राम का नाम	बीएमसी बनाए जाने का दिनांक
केन्द्रीय मैदान	लखीमपुर	लखीमपुर	सैदापुर देवकली	15 अक्टूबर 2009
तराई	बहराइच	बल्हा	नानपारा देहात	7 दिसम्बर 2010
बुन्देलखण्ड	चित्रकूट धाम	कर्वी	बैहार	10 जनवरी 2011
पूर्वी मैदान	बाराबंकी	बंकी	भिटौली कलां	3 मार्च 2011
उत्तर पूर्वी मैदान	गोरखपुर	पिपरौली	भौवापार	5 अप्रैल 2011

जन जैव विविधता पंजिका (पी०बी०आर०)

जन जैवविविधता पंजिकाएं (पी.बी.आर.)

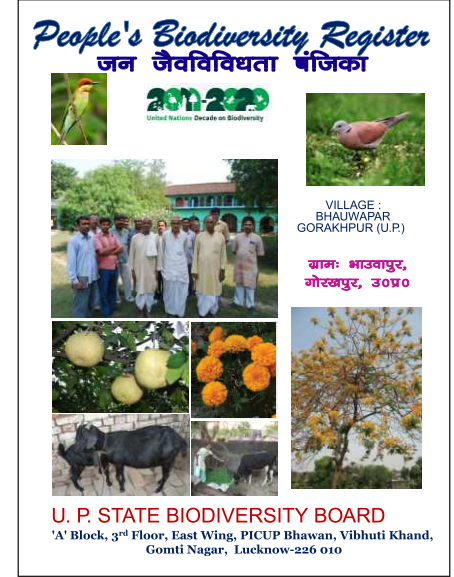
जैवविविधता प्रबन्धन समिति का मुख्य कृत्य स्थानीय लोगों के परामर्श से लोगों की जैवविविधता पंजिका तैयार करना है। पंजिकाओं में स्थानीय जैव संसाधनों की उपलब्धता और जानकारी पर विस्तृत सूचना, उनका चिकित्सीय अथवा कोई अन्य उपयोग अथवा उसके साथ सहबद्ध कोई अन्य परम्परागत ज्ञान समाहित होगा।

इन पंजिकाओं का ध्यान स्थानीय जैवविविधता सहभागी प्रलेखन, परम्परागत ज्ञान और प्रथाओं पर है। इन्हें जैव संसाधनों और सहबद्ध परम्परागत ज्ञान पर स्थानीय लोगों के अधिकारों को सुनिश्चित करने में प्रमुख विधिक दस्तावेजों के रूप में देखा जाता है।

ग्राम भौवापार, जिला गोरखपुर

फसली पौधे	55
महत्व की वन्य वनस्पति प्रजातियां	14
फसलों के नाशीजीव	16
चारा फसल	02
सजावटी पौधे	20
चिकित्सीय वनस्पतियां	12
महत्वपूर्ण वन्य जलीय पादप प्रजातियां	04
इमारती वनस्पतियां	16
जलीय जैव विविधता	11
घरेलू जीव जन्तु	06
जंगलों में अन्य वनस्पतियां	08
मत्स्य संवर्धन	17
जंगली जीव जन्तु (स्तनपायी पक्षी, सरीसृप, उभयचर कीड़े मकोड़े व अन्य)	65
चिकित्सीय महत्व की वन्य वनस्पतियां	16
अपतृण (बीड)	21
फल वनस्पतियां	28
कुल प्रजातियां	311

ग्राम भौवापार जिला गोरखपुर लोगों की जैवविविधता पंजिकाएं बनाने की प्रक्रिया में गाँव में लगभग 311 प्रजातियों की पहचान की गयी थी। ग्रामवासियों ने साल वृक्षों को भी उगाया है।



गाँव का एक पुराना जमरासी वृक्ष
(कैसीन ग्लौको)

बोर्ड ने कई परियोजनाओं को प्रायोजित किया है। इनकी प्रगति निम्नलिखित है:

क. पूरी हुई परियोजना

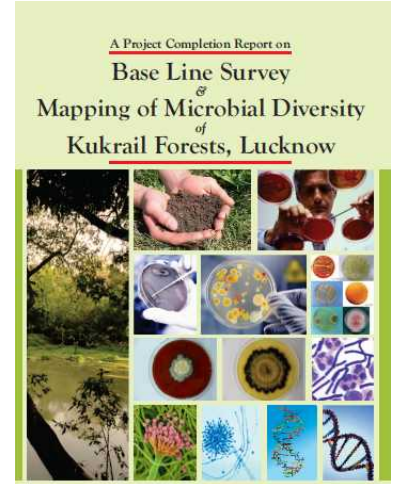
कुकरैल वन लखनऊ का आधारिक सर्वेक्षण और सूक्ष्मक (माइक्रोबियल) जैवविविधता का मानचित्रण

लखनऊ में कुकरैल आरक्षित वन में इंटीग्रल यूनिवर्सिटी द्वारा अध्ययन कराया गया। परियोजना के प्रारंभ होने तक इस वन क्षेत्र के माइक्रोबिस के आधारभूत आंकड़े उपलब्ध नहीं थे। यह अध्ययन जीवाणु और कवक की पहचान और कवक जो कि कुकरैल वन के भीतर बहुतायत में पाये जाते हैं, के लिए रूपात्मक, जैव रासायनिक और आणविक सदृशता को प्रकट करता है।

फास्फोरस, वनस्पतियों में नाइट्रोजन की आवश्यकता के बाद दूसरे वनस्पति पोषकों में से एकमात्र बड़ा पोषक होता है। फास्फेट का लगभग 95–99 प्रतिशत फास्फेट अविलेय होता है इसलिए वनस्पतियों द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है। कुछ मृदा जीवाणु और कवक फास्फेट को विलेय बना सकते हैं और वनस्पतियों को उपलब्ध कराते हैं। यह फास्फोरस का खादों के रूप में उपयोग को प्रबलता से नीचे ला सकता है।

अध्ययन दिखाते हैं कि पीएसएम का उपयोग खेतों में फसल उत्पादन को बढ़ा सकता है। अविलेय फास्फेट को विलेय बनाने की प्रक्रिया में बैक्टीरिया से अधिक दक्षता कवकों में पायी जाने की रिपोर्टें प्राप्त हुई हैं।

वर्तमान के अध्ययन में पन्द्रह (15) जीवाणु जनित वियोजक और इक्कीस (21) कवक जनित वियोजक की अपनी रूपात्मक और आणविक गुणात्मकता के आधार पर पहचान की गई है जो नीचे उल्लिखित है:



आइ-सोलेट सं०	जीवाणु का नाम	फास्फेट विलेयता दक्षता, हाँ/नहीं	लिगिन नियोजन, हाँ/नहीं	आइ-सोलेट सं०	कवक का नाम	फास्फेट विलेयता दक्षता, हाँ/नहीं	लिगिन नियोजन, हाँ/नहीं
1	बैसिलस सब्सिलिस	हाँ	हाँ	1	सिजोफिलम काम्यून	हाँ	हाँ
2	स्यूडोमॉनस	हाँ	मन्द क्रिया	2	एस्पेर्गिलस नाइजर	हाँ	हाँ
3	माइक्रोकोकस	हाँ	नहीं	3	एस्पेर्गिलस लेबुस	हाँ	हाँ
4	सलमोनेक्ला टाइफिमुरिस	हाँ	नहीं	4	अल्टेनेरिया ब्रैसिके	हाँ	हाँ
5	प्रोट्यूस	हाँ	हाँ	5	वर्टिसिलियम	हाँ	हाँ
6	एन्टेरोबैक्टर	हाँ	मन्द क्रिया	6	राइजोक्टोनिया	हाँ	हाँ
7	बैसिकस माइकायडेस	हाँ	हाँ	7	बायपोलरिस टेट्रामेरा	हाँ	हाँ
8	स्ट्रेप्टोकोकस	हाँ	हाँ	8	ग्लायो क्लैडियम	हाँ	नहीं
9	ई.कॉली	हाँ	हाँ	9	ट्राइकोडर्मा	हाँ	हाँ
10	बैसिकस थ्यूरियनजेनेसिस	हाँ	मन्द क्रिया	10	प्युजैरियम आक्सीस्पोरम	हाँ	हाँ

आइ-सोलेट सं०	जीवाणु का नाम	फास्फेट विलेयता, दक्षता, हाँ/नहीं	लिग्निन नियोजन, हाँ/नहीं	आइ-सोलेट सं०	कवक का नाम	फास्फेट विलेयता, दक्षता, हाँ/नहीं	लिग्निन नियोजन, हाँ/नहीं
11	बैसिलस एकथैसिस	हाँ	हाँ	11	एस्परगिलस	हाँ	हाँ
12	बैसिलस सिरयूस	हाँ	हाँ	12	एस्कोबॉलस	हाँ	नहीं
13	स्यूडोमॉनस स्ट्रैटा	हाँ	नहीं	13	फोमा	हाँ	नहीं
14	बैसिलस वीहेन्स्टे फ़ैनेन्सिस	हाँ	हाँ	14	एस्परगिलस फलेबुस	हाँ	हाँ
15	स्टेफाइलो काकस सूसिनस	हाँ	हाँ	15	अक्टरनेरिया एजुकिए	हाँ	हाँ
				16	एस्परगिलस नाइजर	हाँ	हाँ
				17	अल्टरनेरिया एसपीडब्लूएफ 166	हाँ	हाँ
				18	एस्परगिलस सल्फोसिए	हाँ	हाँ
				19	हेल्मिन्थोस्पोरियम	हाँ	हाँ
				20	बॉर्टिसिस	हाँ	हाँ
				21	फ्यूजैरियम आक्सीस्पोरम	हाँ	हाँ

इस अध्ययन के दौरान वियोजित किए गए माइक्रोबियल स्ट्रेंस का कृषिगत, जैव प्रौद्योगिक और औद्योगिक उपयोग है। विमुक्त बाइपोलरिस टेटामेरा, हेल्मिन्थोस्पोरियम, अस्परगिलस फलेबुस उच्च विलेयता क्रियाविधि प्रदर्शित करते हैं और यह सूक्ष्म जीव किसानों/वन विभाग द्वारा जैविक खाद के रूप में प्रयोग में लाए जा सकते हैं जो वनस्पतियों/पेड़ों द्वारा फास्फोरस ग्रहण करने के साथ साथ फसल उत्पादन को बढ़ाता है। इससे अधिक यह रासायनिक खाद के उपयोग और पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम में भी मदद करता है।

पाजिटिव लिग्निन डिग्रेडर्स का बड़ा औद्योगिक महत्व है क्योंकि वे कागज उद्योग में काष्ठ विलेयता के लिए और रंग उद्योग में रंग विरंजित करने के लिए प्रयोग किए जा सकते हैं। इससे भी अधिक लिग्निन डिग्रेडिंग सूक्ष्म जीवों का उपयोग वनस्पति बायोमास को इसकी पूरी क्षमता से चलाने में और पर्यावरणीय मित्र के तरीके से भी किया जा सकता है। चिन्हित कवकीय आइसोलेट बाइपोलरिस टेटामेरा और अगरिकोमाइटिस में फास्फेट विलेयक और लिग्निन डिग्रेडेशन के लिए अधिकतम दक्षता पायी जाती है इस प्रकार दोनों महत्वपूर्ण कृत्य करते हुए क्षेत्रों में वियोजक वनस्पति विकास वर्धक के रूप में प्रयोग किए जा सकते हैं। एक पेपर जिसका शीर्षक था "माइक्रोबियल डीएनए एक्सट्रैक्शन फ्रॉम सायल बाइ डिफरेंट मेटडस इट्स पी०सी०आर० एम्लीफिकेशन" का प्रकाशन बायोकेम सेल, आर्क खण्ड III नं० 1, 2011 में किया गया।



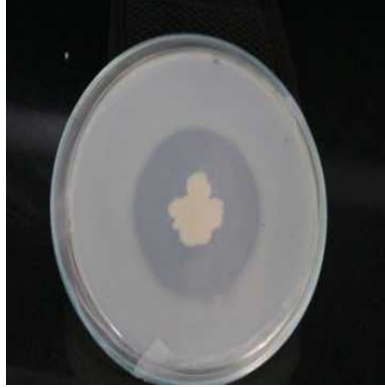
एगर पोषण मीडिया पर विषाणु कालोनी



पी०डी०ए० मीडिया पर कवक कालोनी



पॉज़िटिव लिग्निन डिग्रेडर
भूरे रंग की कवक कालोनी



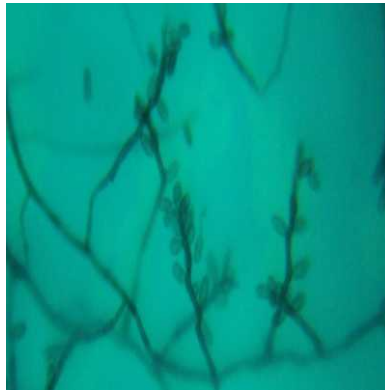
ट्राईकैल्शियम फास्फेट युक्त मीडिया
पर पाज़िटिव फास्फेट सॉलुबिलाइजर



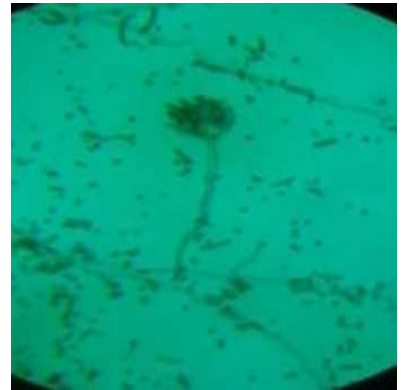
एस्पेरजिलस निडुलोमाईसिस
का सूक्ष्मदर्शी विश्लेषण



एस्पेरजिलस नाईगर
का सूक्ष्मदर्शी विश्लेषण



एस्पेरजिलस फलेवस
का सूक्ष्मदर्शी विश्लेषण



एस्पेरजिलस सलपयूरेकी
का सूक्ष्मदर्शी विश्लेषण



आल्टरनेरिया एसपीडब्ल्यूएफ 166
का सूक्ष्मदर्शी विश्लेषण

ख. चालू परियोजनाएं

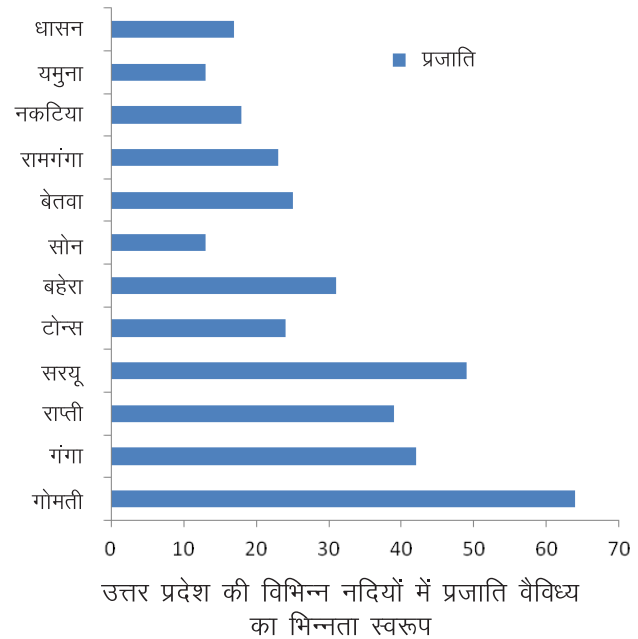
मार्च 2011 में बोर्ड द्वारा 2 वर्ष की अवधि के लिए निम्नलिखित परियोजनाओं की स्वीकृति प्रदान की गयी। प्रत्येक परियोजना की प्रगति नीचे सारांशित की गई है:

1. उत्तर प्रदेश के मीठे पानी की मत्स्य विविधता का जर्मप्लाज्म एक्सप्लोरेशन, निर्धारण और अभिलेखीकरण

यह अध्ययन राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (आईसीएआर) लखनऊ द्वारा किया जा रहा है। जर्मप्लाज्म एक्सप्लोरेशन के आधार पर अब तक गोमती, शारदा, घाघरा, बेतवा, किसान, राप्ती, तमसा, भागुल, अफसरिया, नकटिया, रामगंगा, बहेरा, गंगा, सोन, धसान, चम्बल, केन, सुखेता खैरात नदी और अन्य सहायक नदियों से अलग अलग कुल 4500 मछलियां एकत्र की गई हैं। मत्स्य विविधता संकेत के विभिन्न पहलू निर्धारित किए गए थे जैसे जैव विविधता, वितरण पद्धति, विविधता तालिका, उष्णकटिबंधीय संकेत और आंकड़ों का रूपात्मक विश्लेषण किया जा रहा है।

अन्वेषित सभी नदियों से अब तक 22 कुलों से सम्बन्ध रखने वाली कुल 79 प्रजातियों को एकत्र किया गया है। 28 प्रजातियों वाला

साइप्रिन्डी सर्वाधिक प्रभावी परिवार है। इसके पश्चात् बैगरिडी 7 प्रजातियां, चन्नाडी 5 प्रजातियां, और कोबिटिडी 3 प्रजातियों वाले परिवार हैं। दूसरी नदियों की तुलना में उच्च प्रजातीय सघनता गोमती में 64 प्रजातियां और गंगा में 42 प्रजातियां दर्ज की गई हैं।



एम्बलीसेप्स मंगोइस



पैन्जियो पेन्जिया

कुछ देशज मछलियाँ



प्यूटिनस सोफोर (पोथी, सिधरी)



प्यूटिनस सरना (पोथी, दरही)



प्यूटिनस टिक्टो (सिधरी)



सैल्मोरस्टोमा बेसिला (चेलवा)



प्यूटिनस फ्रुन्टिओ (पोथी, सिधरी)



प्यूटिनस चोला (सिधरी)



रासबोरा डेन्सीकोनियस (डेन्दुआ)



एम्बलीफैरिगोडन मोला (मोला, धवल)



चन्दा नामा (चेनरी)



चन्दा रंगा (चन्दा)

2. उत्तर प्रदेश में कुकुरबिट्स जैवविविधता का अन्वेषण और अभिलेखीकरण

यह अध्ययन सब्जी विज्ञान विभाग, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज फैजाबाद द्वारा किया जा रहा है। खेतों में सर्वे द्वारा निम्नलिखित कुकुरबिट्स प्रकारों की पहचान कर विस्तार से अध्ययन किया गया।

क्रमांक	साधारण नाम	वैज्ञानिक नाम	स्थानीय नाम
गोर्ड			
1	ऐश गोर्ड / वैक्स गोर्ड	बेनिनकासा हिस्पाडा	पेठा / पूजन कोहड़ा
2	बिटर गोर्ड	मोमोरडिका चैरेन्टिया	करेला
3	बोटल गोर्ड	लैजीनेरिया साईसरेरिया	लौकी
4	आईवी गोर्ड	काक्सीनिया कार्डीफोलिया (पर्या० सी० इन्डिका)	कुंदरू
5	प्वाइंटेड गोर्ड	ट्राइकोसेन्थस डायोका	परवल
6	रिज गोर्ड	लूफा एक्यूटेंगुला	तरोई
7	राउण्ड गोर्ड	प्रेकीट्रूनलस फिस्टूलोसस	टिण्डा
8	स्नेक गोर्ड	ट्राइकोसेन्थस एन्ज्यूना	चिचिण्डा
9	स्पाइन गोर्ड	मोमोडिका डायोका	खेकशी
मेलन			
10	मस्क मेलन	कुकमिस मेलो	खरबूजा
11	सरपेंट / लांग मेलन	कुकमिस मेलो वेरा. लैक्सीओसस	ककड़ी
12	स्नैप मेलन	कुकमिस मेलो वेरा. मोमोडिका	फूट
13	वाटर मेलन	सेट्रूलस लेनेटस	तरबूज
अन्य			
14	कुकुम्बर	कुकमिस सटाइवस	खीरा
15	पम्पकिन	कुकुरबिटा मोस्काटा / कुकुरबिटा पेपो	कद्दू



उपरोक्त की भिन्न-भिन्न जीनोटाइप व लैन्ड रेसेस की पहचान का कार्य किया जा रहा है।

3. उत्तर प्रदेश में इनवेजिव मछलियों का सूचीकरण (इन्वेन्टराइजेशन), प्रभाव मूल्यांकन और जोखिम संप्रेषण

यह अध्ययन राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (आई०सी० ए०आर०) लखनऊ द्वारा किया जा रहा है। अब तक उत्तर प्रदेश के भिन्न-भिन्न जिलों में संग्रहित सूचना पर आधारित उत्तर प्रदेश में उपलब्ध 67 विदेशागत सजावटी मछलियां बतायी गई हैं। गोमती और सई नदी में कुल 59 प्रजातियां दर्ज की गई हैं।

परियोजना के अधीन एक्वाकल्चर पद्धति से 10 विदेशागत मत्स्य प्रजातियों की उपस्थिति दर्ज की गई है, जिसमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं –

1. कामन कार्प (साइप्रिनस कार्पियो)
2. सिल्वर कार्प (हाइपोथैल्मिक्थिस मालिट्रिक्स)
3. ग्रास कार्प (सिटनोफैरिंगोडान इडेल्ला)
4. बिगहेड (अरिस्टिक्थिस नोबिलिस)
5. टिलैपिया (ओरियोक्रोमिस मोसोम्बिकस)
6. नाइल टिलैपिया (ओ नाइलोटिकस)
7. अफ्रीकन कैटफिस (क्लैरियस गैरीपीनस)
8. सुत्वी कैटफिस (पंगूसिया नाडाल हाइपोफथैल्मस)
9. पैकू (पाइरैक्टस बैकीपामस)
10. ब्लैक कार्प (मालीफैरिंगोडान इडेल्ला)

इन दस विदेशागत मत्स्य प्रजातियों के अतिरिक्त निम्नलिखित पाँच प्रजातियां रेखांकित की गई हैं और इनवेजिव प्रजातियों के रूप में पहचानी गई हैं तथा उनके आक्रमणकारी गुणों को दर्ज किया गया है।

विभिन्न नदी फैलाव क्षेत्रों जैसे कि गंगा, यमुना, शारदा, गोमती, सई, तमसा, में तथा कुछ अन्य प्राकृतिक निकायों जैसे कि झीलों और कतर्निया क्षेत्र (बहराइच) में इनवेजिव प्रजातियों की उपस्थिति के अन्वेषण के प्रयास किए गए थे और पाया गया कि नौ इनवेजिव प्रजातियां अस्तित्व में थीं। इन विदेशागत प्रजातियों की आक्रामकता का भी मूल्यांकन किया गया और पाया गया कि इन नदी प्रसारों में साइप्रिनस कार्पियो, कम्प्युनिस, साइप्रिनस कार्पियो स्पेकुलरिस, अरिस्टिक्थिस नोबिलिस, आरियोक्रोमिस मोसोम्बिकस ओ नाइलोटिकस क्लैरियस गैरीपीनस आक्रामक थीं।



ओरियोक्रोमिस मोसोम्बिकस (टिलापिया)



ओ० निलोटिकस (नाइल टिलापिया)



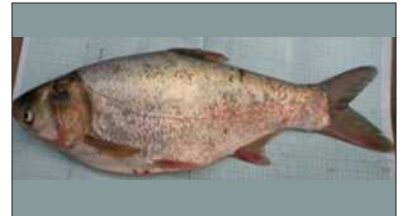
एरिस्टिक्थिस नोबिलिस (बिग हेड)



सिप्रिनस कार्पियो (कामन कार्प)



क्लैरियस गोरियेपिनस (अफ्रीकन कैट फिश)



हाइपोथैल्मिक्थिस मालिट्रिक्स

4. उत्तर प्रदेश के लाइकेन की गणना

यह अध्ययन राष्ट्रीय वानस्पतिक अनुसंधान संस्थान, लखनऊ द्वारा किया जा रहा है। दक्षिण पूर्व एशिया में सी०एस०आई०आर०-राष्ट्रीय वानस्पतिक अनुसंधान संस्थान (एल०डब्लू०जी०) का लाइकेन वनस्पति संग्रहालय सबसे बड़ा है। इसके पास 1600 प्रजातियों का प्रतिनिधित्व करने वाले लगभग 130000 नमूनों का संग्रह और भारत के सभी वनस्पति भौगोलिक क्षेत्र हैं। पादप संग्रहालय की सम्पूर्ण बारीक जाँच में उत्तर प्रदेश से संबंधित लगभग 1000 लाइकेन के नमूने निकले हैं और उन्हें डिजिटाइज किया जा रहा है तथा 750 पादप संग्रहालय नमूनों की प्रविष्टि पूरी कर ली गई है। प्रारंभ में उत्तर प्रदेश में लगभग 90 लाइकेन प्रजातियों की पहचान की गई थी। लगभग 120 बिना पहचाने गए पादप संग्रहालय नमूने चिन्हित किए गए जिसके परिणामस्वरूप उत्तर प्रदेश के लिए 20 नए रिकार्ड बने जो निम्न प्रकार हैं –

क्रम सं०	लाइकेन का नाम	क्रम सं०	लाइकेन का नाम
1	एनेका डिसेपिपंस	11	पेल्यूला कॉर्टिकोला
2	एनिसोमेरेडियम अम्बीगुअम	12	पेल्यूला प्लैकोडाइजन्स
3	एनिसो मेरेडियम एनिसो लॉबम	13	पेल्यूला स्टेपेये
4	एथोपाइडेनिया अल्बोअर्टा	14	पर्ट्यूसरिया ल्यूकोसोरा
5	बैसिडिया इंकागूयंस	15	फाइलिस्कम टेस्टूडिनियम
6	बैसिडिया रुबेल्ला	16	पाइक्सिन पेट्रिकोसा
7	ब्यूएलिया क्वार्टिजियाना	17	पाइक्सिन सबसाइनेरिया
8	डिरिनैरिया अप्लाण्टा	18	रिनोडिना एक्सिगुआ
9	हाइपरफिस्किया अडग्लैडिनाटा	19	स्ट्राइगुला एलिगन्स
10	लाइकिनेल्ला प्लेक्सा	20	थाइरेआ प्लेक्टोस्वीरा

अब तक उत्तर प्रदेश में लगभग 110 लाइकेन की प्रजातियां बतायी गई हैं।

उत्तर प्रदेश की कुछ प्रसिद्ध लाइकेन



बैसिडिया इनकान्युएन्स
उत्तर प्रदेश का क्रस्टोज लाइकेन में नया रिकार्ड



कैलोप्लाका वाइटेलिन्यूला
उत्तर प्रदेश की चट्टानों से संग्रहीत एक सुन्दर क्रस्टोज लाइकेन



डिरिनेरिया एजियालिटा
छाल पर उगने वाला एक सामान्य पर्णनुमा लाइकेन



ग्रेफिस सुबासहिनी व *पिक्सीन कोकोज़*
वृक्ष तने पर उगने वाले दो सामान्य लाइकेन



हाइपरफिसिया एडग्लूटीनेटा
छाल पर पाये जाने वाला दुर्लभ लाइकेन
उत्तर प्रदेश के लिए नया रिकार्ड



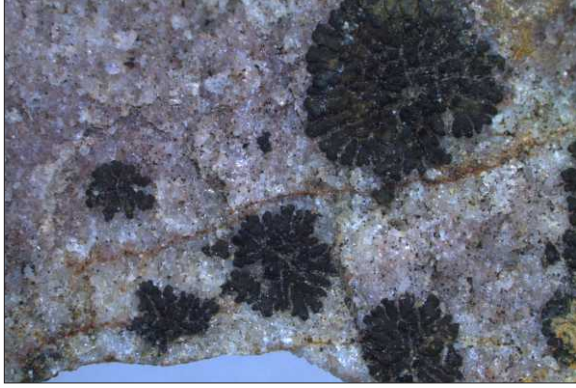
लिकानोरा ट्रापिका
वृक्ष की छाल पर उगा हुआ सामान्य क्रस्टोज़ लाइकेन



लिट्राउटिया ट्रान्सग्रेस
वृक्ष की छाल पर होने वाला एक सुन्दर क्रस्टोज़ लाइकेन



पेन्टुला युप्लोका
चट्टानों व ऐतिहासिक भवनों के चूने के प्लास्टर पर
बहुतायत से उगने वाला लाइकेन



पेल्टुआ प्लेकोडिजेन्स
उत्तर प्रदेश के लिए नया रिकार्ड



रिनोडिना सोफोडिस एक सामान्य क्रस्टोज़ लाइकेन
के एस्कोस्पोर्स

5. झांसी, ललितपुर, जालौन और महोबा में गिद्धों के बसेरा और प्रजनन स्थलों की मानीटरिंग

यह अध्ययन लखनऊ विश्वविद्यालय के जन्तु विज्ञान विभाग द्वारा किया जा रहा है। यह प्रोजेक्ट गिद्धों की प्राकृतिक प्रजनन स्थलों के अध्ययन हेतु सूत्रबद्ध किया गया है जो मुर्दाखोरों के स्व-स्थानिक (इन-सीटू) संरक्षण में मदद करेगा। इन प्रजातियों के संरक्षण बिन्दुओं में बसेरों का महत्व विशिष्ट है। उत्तर प्रदेश के चयनित किए गए चार जिलों अर्थात् झांसी, ललितपुर, जालौन और महोबा को गिद्ध प्रजातियों की पहचान के साथ साथ उनके प्रजनन और बसेरा स्थलों के लिए सर्वेक्षित किया गया था।

गिद्ध प्रजातियां जो सामान्यतया उत्तर प्रदेश में पायी जाती हैं –

आवासीय प्रजातियां	प्रजनन करने वाली प्रजातियां
इजिप्सियन वल्चर (नियोफ्रान परक्नोटरस)	ग्रिफान वल्चर (जिप्स फुल्वस)
लांग बिल्ड वल्चर (जिप्स इंडिकस)	हिमालयन ग्रिफान वल्चर (जिप्स हिमालयनिस)
हवाइट बैकड वल्चर (जिप्स बंगालेंसिस)	सिनेरियस वल्चर (एजीपियस मानेचस)
स्लेण्डर बिल्ड वल्चर (जिप्स टिन्यूरोस्टिस)	
किंग वल्चर (सरकोजिप्स कल्वूस)	

उत्तर प्रदेश में पहचानी गई 8 प्रजातियों में से केवल 3 को अध्ययन क्षेत्र में देखा गया है—
जिप्स इण्डिकस, सरकोजिप्स कल्वूस और नियोफ्रान परक्नोटरस।

अध्ययन क्षेत्र में गिद्धों का प्रजातिवार वितरण

क्रम सं०	जिला	लांग बिल्ड वल्चर (जिप्स इंडिकस)	किंग वल्चर (सारकोजिप्स कैल्बुस)	इजिप्शियन वल्चर (नियोफ्रान परेक्नोप्टस)	बसेरा स्थल	प्रजनन स्थल
1	झांसी	4-5	—	50-60	भगवतपुरा	लेहेर गिरि
2	ललितपुर	250-275	2-3	10-15	धौरा देवगढ़	धौरा, देवगढ़, मदनपुर पूर्वी बीट, गौथरा बीट, बीट
3	जालौन	—	—	60-70	—	—
4	महोबा	—	—	4-5	—	—
	योग	254-280	2-3	124-150		

अध्ययन क्षेत्र से गिद्धों की संख्या लगभग 380-433 बतायी गई है। अध्ययनों में अब तक मात्र 3 बसेरा स्थलों और 6 प्रजनन क्षेत्रों को देखा गया है। अपेक्षाकृत अधिक स्थलों, प्रजातियों और उनकी संख्या की उपस्थिति के लिए फील्ड विजिट और अग्रतर अध्ययन जारी है।



शिशु जिप्स इन्डिकस



वयस्क जिप्स इन्डिकस



शिशु इजिप्शियन गिद्ध निओफ्रान पर्कनोटेरस



वयस्क इजिप्शियन गिद्ध निओफ्रान पर्कनोटेरस

6. उत्तर प्रदेश के ग्रासलैण्ड में बंगाल फ्लोरिकन (*हाइबरोप्सिस बंगालेसिस*) की प्रास्थिति और आवासीय मूल्यांकन

यह अध्ययन भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून उत्तराखण्ड द्वारा किया जा रहा है। चूंकि बंगाल फ्लोरिकन संकटकालीन खतरे में पड़ी प्रजातियों में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया है इसलिए इस अध्ययन से प्रजनन संरक्षण हेतु एक कार्ययोजना के विकास के लिए एक आधार उपलब्ध होने की आशा की जाती है क्योंकि ग्रासलैण्ड उच्च जैव विविधता को आधार प्रदान करता है, पक्षियों के लिए संरक्षण योजना का विकास भी तराई क्षेत्र में ग्रासलैण्ड के संरक्षण में सहायता प्रदान करेगा। अब तक दुधवा और किसनपुर पर्यवेक्षण के अन्दर और इधर-उधर 10 गांवों से 35 प्रश्नमाला सर्वेक्षण आंकड़े संग्रहीत किए गए हैं। दुधवा और किसनपुर के विभिन्न ग्रासलैण्ड में 99 वनस्पति भूखण्ड भी पड़े हुए हैं। दुधवा राष्ट्रीय पार्क में सथियाना (20), सोनारीपुर (18) और सलूकापुर गैंडा बाड़ा (29) में वनस्पति भूखण्ड पड़े हुए हैं। किसनपुर वन्य जीव अभयारण्य में 32 भूखण्ड पड़े हुए हैं।



उड़ान में बंगाल फ्लोरिकन



बंगाल फ्लोरिकन

बंगाल फ्लोरिकन की पहचान के लिए फील्ड स्टाफ के प्रशिक्षण हेतु इस्तहार प्रकाशन किया गया। दुधवा फारेस्ट काम्प्लेक्स में मार्च 2012 के महीने में सर्वे प्रास्थिति और बंगाल लोरिकन के संरक्षण के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें डिप्टी फील्ड डायरेक्टर, ए. सी.एफ. और रेन्ज अधिकारियों को सम्मिलित करके लगभग 30 वन कार्मिकों ने भाग लिया। बंगाल फ्लोरिकन के प्रास्थिति सर्वेक्षण के महत्व की ओर अधिकारियों और कर्मचारियों में सुग्राह्यता लाने के उद्देश्य से इस कार्यशाला का आयोजन किया गया था।

किसनपुर अभयारण्य सहित दुधवा राष्ट्रीय पार्क में मार्च 2012 में सर्वेक्षणों के दौरान पीआई और जेआरएफ द्वारा मात्र एक नर बंगाल लोरिकन को देखा गया है। दूसरों के द्वारा देखे जाने का कोई विश्वसनीय साक्ष्य दर्ज नहीं किया गया। प्रारंभिक सर्वेक्षण दिखाते हैं कि बंगाल फ्लोरिकन की जनसंख्या उससे भी कम है जितनी कि इससे पूर्व आशा की गई थी।

7. उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र में उपयोगी वन्य खाद्य वनस्पति संसाधनों की एक सचित्र संसाधन सूची का निर्धारण और तैयार किया जाना

यह अध्ययन राष्ट्रीय वानस्पतिक अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर) लखनऊ के इथनोबॉटनी एण्ड इकोलॉजी डिवीजन द्वारा किया जा रहा है। तराई जिलों के जनजातीय क्षेत्रों अर्थात् बहराइच और श्रावस्ती में व्यापक वनस्पति सर्वेक्षणों और संग्रह पर आधारित जनजातियों द्वारा प्रयुक्त संभावित अण्डरयूटिलाइज्ड वन्य खाद्य वनस्पतियों पर उपयोगी सूचना का अभिलेखीकरण किया गया है। इन वनस्पतियों/ प्रजातियों के बारे में संक्षिप्त नाम, स्थानीय पता, ऋतुजैविकी, उपयोग, रासायनिकता, तिवरण और संरक्षण प्रास्थिति की संक्षिप्त सूचना उपलब्ध करायी गई है। अण्डरयूटिलाइज्ड वन्य खाद्य वनस्पति प्रजातियों के प्रमाणक नमूने भी वनस्पति संग्रहालय, राष्ट्रीय वानस्पतिक अनुसंधान संस्थान, लखनऊ (एल०डब्लू० जी०) में प्रक्रमित, संग्रहित, चिन्हित, अभिगमित और निक्षेपित किए गए।

उत्तर प्रदेश के तराई जिलों में जनजातियों द्वारा अब तक अपनी संभावित उपयोगिता के संदर्भ में साठ वन्य खाद्य वनस्पति प्रजातियां बतायी गई हैं।



अपने घर के सामने थारू महिला



कोलोकेसिया इस्कूलेन्टा
खाद्य पत्तियाँ



आइपोमिया एक्वेटिका
शाक के रूप में प्रयुक्त

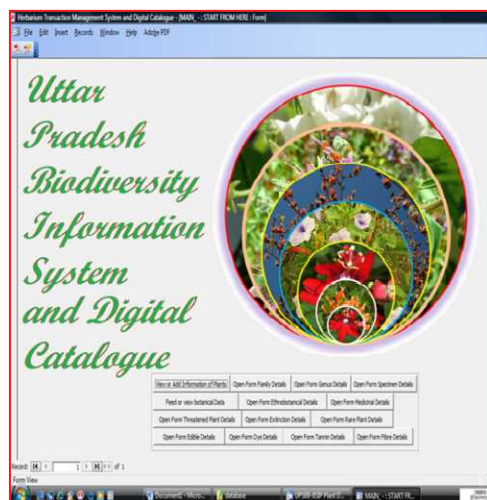


आर्टोकार्पस लाकूचा
पके फल खाये जाते हैं



स्पान्डियास पिन्नाटा
चटनी और अचार के रूप में प्रयुक्त

8. उत्तर प्रदेश जैवविविधता डाटाबेस सूचना पद्धति (यू.पी.बी.आई.एस.) के विकास हेतु साहित्य सर्वेक्षण के माध्यम से वनस्पति जैवविविधता का अभिलेखीकरण



यह परियोजना कार्य बीरबल साहनी पुरावनस्पति विज्ञान संस्थान द्वारा किया जा रहा है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य उत्तर प्रदेश जैवविविधता डाटाबेस सूचना पद्धति (यू.पी.बी.आई.एस.) को उत्तर प्रदेश राज्य में व्यवस्थित करना और जैवविविधता शोधकर्ताओं हेतु प्रथम बहुकार्यात्मक साधन के रूप में वर्गीकृत सूचना, प्रजाति के नामों समानार्थियों वितरण चित्रण और साहित्य सन्दर्भों के विस्तृत उदाहरण से आच्छादित आनलाइन प्रजातीय संग्रह संख्या पर सरसरी नजर डालने हेतु विकसित करना है। प्रथम चरण में एन्जियोस्पर्म, टेरीडोफाइट्स, ब्रायोफाइट्स, फंगल, अल्गल और लाइकेन प्रजातियों को सम्मिलित करते हुए एक आनलाइन डाटाबेस तैयार कर लिया गया है। अब तक 628 सामान्य और 296 परिवारों से 2770 वनस्पति प्रजातियों का डाटाबेस पूरा कर लिया गया है। इसके अतिरिक्त 04 इण्डेमिक और 01 दुर्लभ ब्रायोफाइट्स प्रजातियां भी अभिलेखीकरण के लिए चिन्हित की गई हैं।



Birbal Sahni Institute of Palaeobotany, Lucknow

(U. P. State Biodiversity Board Sponsored Project: Uttar Pradesh Biodiversity Information System)

Angiosperms Species information Data Sheet

	Name of Field	Angiosperms
1.	Registration No.	BSIP0001
2.	Genus	<i>Amaranthus</i> Linn.
3.	Plant Name	<i>Amaranthus tricolor</i> Linn.
4.	Common / Local names	Joseph's-coat, Rangin-Chaulai
5.	Kingdom	Plantae -- Planta, plantes, plants, Vegetal
6.	Class	Magnoliopsida -- dicots, dicotyledons, dicotyledons
7.	Order	Caryophyllales
8.	Family	Amaranthaceae -- amaranthus, pigweed
9.	Basionym	X
10.	Synonyms	X
11.	Subspecies	X
12.	Variety	X



Birbal Sahni Institute of Palaeobotany, Lucknow

(U. P. State Biodiversity Board Sponsored Project: Uttar Pradesh Biodiversity Information System)

Pteridophytes Species Information Data Sheet

	Name of Field	Pteridophytes
1.	Registration No.	BSIP 2001
2.	Genus	<i>Ophioglossum</i> Linn.
3.	Plant Name	<i>Ophioglossum reticulatum</i> Linn.
4.	Common / Local names	Elpata, Snake tongue.
5.	Kingdom	Plantae
6.	Class	Polypodiopsida
7.	Order	Ophioglossales
8.	Family	Ophioglossaceae
9.	Basionym	X
10.	Synonyms	<i>Ophioglossum peruvianum</i> Presl, <i>O. petiolatum</i> sensu Wieffering, <i>O. cordifolium</i> Roxb.
11.	Subspecies	X
12.	Nativity	Puerto Rico.
13.	Locality	Bahraich, Abdullaganj, Gorakhpur: Kusmi Forest.
14.	Habit	Herb.
15.	Habitat	Wet floor of forest or on moist alluvial sandy soil.

9. उत्तर प्रदेश के उभयचरों और सरीसृपों की टीकायुक्त और रंगीन जांचसूची

यह अध्ययन जन्तु विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा किया जा रहा है। प्राथमिक रूप से इस परियोजना की स्वीकृति एक वर्ष की अवधि के लिए उत्तर प्रदेश के उभयचरों और सरीसृपों की न्यूनतम जानी गई जैवविविधता के समावेष्टित अभिलेखीकरण और विस्तृत प्राकृतिक इतिहास और जैव भौगोलिक सूचना, प्राथमिक मूल्यांकन के सरलीकरण और हर्पेटोलाजिकल प्राणिजात के संरक्षण के प्राथमिकता क्षेत्रों की पहचान के उद्देश्य के साथ की गई थी।

क्षेत्रीय भ्रमण, सामग्री संग्रहण, आंकड़ें और छायांकन के आधार पर अब तक उत्तर प्रदेश में विभिन्न वर्ग, उपवर्ग, परिवार, वंश और प्रजातियों में बताए गए सरीसृप और उभयचर नीचे दी गई सारणी में उल्लिखित हैं:

वर्ग	सरीसृप		उभयचर	
	संख्या	नाम	संख्या	नाम
वर्ग	03	क- स्क्वामेटा, ख- टेस्टूडाइनिस, ग- क्रोकोडिलिया	1.	क- अनुरा
उपवर्ग	03	क- ओफीडिया, साउरिया / लेसरटिला	-	-
परिवार	07	क- कोल्युब्रिडी, ख- वरैनिडी, ग- जियोमिडिडी, घ- क्रोकोडाइलिडी, ङ- फथोनिडी, च- बायोडी, छ- जिकायडी	1.	क- रैनिडे
वंश	50	-	2.	क- होप्लोबेट्रेचस ख- राना
प्रजाति	46	-	2.	क- क्रैसस ख- टाइग्रीना



मगर (क्रोकोडाइलस पालुस्टेरिस)



घड़ियाल (गोवियोसिस गैगाटिकस)

10. पूर्वी उत्तर प्रदेश के विन्ध्य क्षेत्र में आई०टी०के० (देशी तकनीकी ज्ञान) का उपयोग और फसल उत्पादन और सुरक्षा में अनुभव

यह अध्ययन कृषि विज्ञान विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा किया जा रहा है। वास्तविक परियोजना माह अक्टूबर 2011 में कृषि के विभिन्न पहलुओं को केन्द्रित करते हुए सहभागी सर्वेक्षण द्वारा विशिष्ट आई०टी०के० (देशी तकनीकी ज्ञान) की प्रास्थिति संग्रहित करने के उद्देश्य के साथ प्रारम्भ की गई थी। रिपोर्टिंग अवधि (2011-12) के दौरान कुल 9 जिलों के 30 गाँवों में किसानों के साथ कृषि स्थल सर्वेक्षण के लिए और विधिमान्यता के लिए 2 स्थलों अर्थात् कृषि विज्ञान संस्थान, मुख्य परिसर में और आरजीएससी, मिर्जापुर, दक्षिण परिसर में सहभागिता विचार विमर्श संचालित किया गया। कुछ परंपरागत प्रथाएं नीचे चित्रों में दर्शायी गई हैं:-



अहाते की खाद



जीव तत्व समृद्ध मृदा



अहाते की खाद बनाने का परम्परागत तरीका



अहाते की खाद बनाने की देशी विधि



अहाते की खाद बनाने की परिष्कृत विधि

भूमि की तैयारी, बीज शोधन, बुआई की विधियाँ, उर्वरक उपयोग,
इन्टरकल्चरल आपरेशन, फसल रक्षा



बैलों से जुताई



बैलचालित पटेलों से ढेलों की कुचलाई



श्रमिकों द्वारा ढेलों की कुचलाई



बैलचालित रोलर से ढेलों की कुचलाई



बैलचालित देशी हल से पडलिंग



ट्रैक्टर से पडलिंग



श्रमिकों द्वारा रोपाई



धान रोपक द्वारा रोपाई



ड्रमसीडर से सीधी बोआई



बाँस आधारित काष्ठ समर्थित खाद्यान संग्रहण



गाय-गोबर व मिट्टी लेपित बाँस आधारित समर्थित खाद्यान संग्रहण



कांस और बाँस आधारित खाद्यान संग्रहणी



खाद्यान संग्रहण हेतु कोठी व कुठला



अन्न संग्रहण हेतु कोठी व कुठला



गाय-गोबर व मिट्टी लेपित काष्ठ आधारित खाद्यान संग्रहक कोठी

अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस -2011

अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस- 2011

“वन्य जैवविविधता -पृथ्वी का जीवंत खजाना” पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

उ०प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा डॉ० राम मनोहर लोहिया नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी परिसर में दिनांक 22.05.2011 को अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर “वन्य जैवविविधता-पृथ्वी का जीवंत खजाना” विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उ०प्र० वन विभाग तथा अन्य राज्यों से अधिकारियों को सम्मिलित करते हुए, विभिन्न अनुसंधान संस्थाओं/संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा गैर सरकारी संगठनों से कुल मिलाकर 400 प्रतिभागियों ने सम्मेलन में भाग लिया। जो लोग जैव विविधता से संबंधित हैं या उससे संबंधित कार्य-व्यापार में लगे हुए हैं, उन सभी को एक प्रभावी मंच उपलब्ध कराने की दृष्टि से इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया था क्योंकि जैवविविधता न केवल वनों के स्वास्थ्य एवं जीवन शक्ति का अपितु पारिस्थितिकीय सेवाओं व्यापक सीमा विस्तार का भी आधारभूत है जो कि लोगों के जीविकोपार्जन तथा कल्याण के लिए आवश्यक हैं। संगोष्ठी का आयोजन माननीय वनमंत्री श्री फतेह बहादुर सिंह द्वारा किया गया। इस आयोजन के मुख्य अतिथि थे पद्मश्री पी०के० सेन, भारतीय वन सेवा (सेवानिवृत्त)।

प्रारंभिक सत्र में प्रमुख वन संरक्षक, उ०प्र० श्री डी०एन०एस० सुमन ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए स्वागत भाषण दिया। उन्होंने बताया कि यह वर्ष 2011 अंतर्राष्ट्रीय वन वर्ष घोषित किया गया है और अपने वन संसाधनों के संरक्षण तथा विकास के लिए दीर्घकालिक योजना के माध्यम से अपने ग्रह-धरती को बचाने के लिए इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस का विषय “वन्य जैवविविधता-पृथ्वी का जीवंत खजाना” अत्यंत समीचीन है। उन्होंने आगे बताया कि जैवविविधता के साथ वनस्पति एवं जीव जन्तुओं के संरक्षण संबंधी विभिन्न परियोजनाओं के कार्यान्वयन के माध्यम से वन सीमा के निकट रहने वाले स्थानीय लोगों की आर्थिक स्थिति के उन्नयन के लिए वन विभाग द्वारा निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं।

इस अवसर पर बोलते हुए उ०प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड के सचिव श्री पवन कुमार ने राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्देश्यों तथा वनस्पतीय एवं जीव जंतुमय जैवविविधता के संरक्षण हेतु अब तक किये गये प्रयासों को रेखांकित किया। अपने प्रस्तुतिकरण में उन्होंने जैवविविधता के संघटकों और उसके महत्व का संक्षिप्त विवरण भी दिया। उन्होंने बताया कि विकासशील देशों में रहने वाले लगभग 80 प्रतिशत लोग औषधि के प्रमुख स्रोत के रूप में पेड़-पौधों का प्रयोग करते हैं। सर्वाधिक प्रस्तावित 150 औषधियों में से 57 प्रतिशत औषधियों का मूल जैव विविधता में निहित है। संगोष्ठी के विषय के दृष्टिगत उन्होंने वर्ष 2012 के महत्व को रेखांकित किया जैसाकि यह वर्ष सी०बी०डी० और यूनाइटेड नेशन्स फ्रेमवर्क कन्वेंशन आन क्लाइमेट चेंज की बीसवीं वर्षगांठ है और भारत कॉप-12 का आयोजन करने जा रहा है। उन्होंने बताया कि हमारा देश भारत विश्व के प्रजाति सम्पन्न शीर्ष दस राष्ट्रों में से एक है अतएव वनों का क्षरण विशेष करके भारत के लिए हानिकर होगा। इसलिए मैं आप सभी लोगों से वन्य जैवविविधता के संरक्षणार्थ सहयोग करने का आवाहन करता हूँ। कॉप-12 के आयोजन के रूप में हमें, विश्व के सबसे वैविध्यपूर्ण पार्थिव परितंत्र (इकोसिस्टम) अर्थात् वनों को बचाने के लिए अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए। वनों का विनाश कुछ तो उनके अवमूल्यन के कारण तथा कुछ इस कारण से भी हो रहा है क्योंकि हमारा बाजारीय अर्थतंत्र सुदृढ़ वनों द्वारा उपलब्ध कराये जाने वाले पारिस्थितिकीय सेवाओं को मान्यता नहीं देता। पृथ्वी के इस खजाने को नष्ट होने से रोकने के लिए हमें मानव जीवन के कल्याण तथा विकास के लिए उसके महत्व को समझना तथा अपनाने की आवश्यकता है।

श्री चंचल कुमार तिवारी, प्रमुख सचिव वन और अध्यक्ष, उ०प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड ने अपने वक्तव्य में कहा कि जैवविविधता हमारी जीविका से सीधे संबंधित है। मानव जीवन को बनाये रखने में वनों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। विश्व भर में वन्य जैवविविधता से वाणिज्यिक महत्व के पाँच हजार से अधिक उत्पाद तैयार होते हैं। उन्होंने बताया कि आजकल जैवविविधता का क्षरण खतरनाक गति से हो रहा है और वनस्पति एवं जीव-जन्तु की सैकड़ों प्रजातियाँ नित्य प्रति धरती से गायब होती जा रही हैं। वैविध्यपूर्ण वन्य पारिस्थितिकीय तंत्र वस्तुतः पृथ्वी का जीवंत खजाना है और जलवायु परिवर्तन के प्रशमन के प्रति एक प्रकार का बीमा है। दुर्लभ वन्य विविधता तथा जीन पूलों के संरक्षण की दृष्टि से राज्य के सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 2.5 प्रतिशत भाग का प्रबंधन किया जा रहा है। जैव संसाधनों के निर्वहनीय उपयोग के लिए जैव विविधता को प्राथमिक आधार पर संरक्षित करना हम सब का प्रमुख दायित्व है। वन्य जैव विविधता को बचाने के लिए क्षरित हो रहे वनों को पुनः स्थापित करने की नितांत आवश्यकता है।

मा० वन मंत्री, उ०प्र० सरकार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आज सारा विश्व, जलवायु परिवर्तन, सूख रहे जल संसाधनों तथा बढ़ती जा रही प्राकृतिक आपदाओं के प्रतिकूल प्रभावों से बुरी तरह परेशान है, इसलिए आज समय की महती आवश्यकता है कि लोगों में इन हो रहे परिवर्तनों के प्रति जागरूकता पैदा की जाय और अपने प्राकृतिक जैव संसाधनों को संरक्षित करके अपनी धरती को बचाया जाय।

मानव जाति के लिए वन सुरक्षा कवच की तरह होते हैं। राज्य के वन एवं वृक्ष आच्छादित क्षेत्र (भौगोलिक क्षेत्र का 9.01 प्रतिशत) के बारे में चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि हमें अपने विकास कार्यों के साथ-साथ वन/वृक्ष आच्छादन के प्रतिशत में भी वृद्धि करनी है। उन्होंने बताया कि 31 जुलाई, 2007 को एक दिन में एक करोड़ पौधरोपण करके हमारे राज्य ने गिनीज विश्व रिकार्ड बनाकर एक बहुत बड़ी उपलब्धि हासिल की है जो गर्व की बात है। जैवविविधता ही हमारी पृथ्वी की विशिष्ट पहचान है। जैवविविधता को सुदृढ़ करने में हमारे वन अत्यंत सहायक होते हैं।

उद्घाटन सत्र में इस संगोष्ठी के विषय “वन्य जैवविविधता-पृथ्वी का जीवंत खजाना” पर एक स्मारिका का विमोचन किया गया जिसके 164 पृष्ठों में 25 लेख सम्मिलित हैं।

पद्मश्री पी०के० सेन, भा०व०से० (अ०प्रा०) ने “जैवविविधता” पर अत्यंत ज्ञानवर्धक भाषण दिया। विशेष अतिथि के रूप में अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा जैव विविधता के मामले में सारे विश्व में केवल दो देश ब्राजील और कोस्टारिका ही हमसे ज्यादा सम्पन्न हैं। भारत की 70 प्रतिशत से अधिक जैवविविधता वनों में समाहित है। कृषि जैवविविधता, जो कुल जैवविविधता के 30 प्रतिशत से कम है, के भी कृषि उत्पादित पौधों के मूल के 12 केन्द्र हैं जो कि 30000-50000 प्रजातियों के मूल का केन्द्र हैं। भारत में जैव विविधता की एक समृद्ध और वैविध्यपूर्ण विरासत है जिसमें व्यापक क्षेत्र के वास स्थान भी है।

श्री सेन ने अग्रतर बताया कि यह जैवविविधता का वैश्विक प्रमुख स्थल (ग्लोबस हाटस्पॉट) है जिसके 2.4 प्रतिशत क्षेत्र के भीतर 7.31 प्रतिशत प्रजातियाँ हैं। उन्होंने कहा कि विघटित वनों में शिकार और शिकारी पशु नहीं होते तथा उसमें पानी को धारण करने की क्षमता नहीं होती जिसके परिणामतः बाढ़ और सूखे की स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। वन केवल जंगली जीव-जन्तुओं का घर ही नहीं होता अपितु उसके वृक्ष विभिन्न ऊँचाईयों पर अपने पर्ण वितानों के बीच से वर्षा जल को पार (टपकने) होने देते हैं जो बह कर के नदी-नालों में जाता है और उनका पुनः संभरण करता है।

उन्होंने इंगित किया कि पेड़ लगाने और वनरोपण (एफारेस्टेशन) से प्राकृतिक जैवविविधता को कभी प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता है, इसीलिए अधिक आर्थिक लाभ की दृष्टि से प्राकृतिक वनों को प्रतिस्थापित करने के लिए वनरोपण के हमारे सभी प्रयासों ने जैव विविधता को और नुकसान ही पहुँचाया है। अब सारे विश्व में यह बात समझ में आने लगी है कि अर्थतंत्र, पर्यावरण और जैवविविधता में एक निश्चित सम्बन्ध विद्यमान है। उनके अनुसार मानव और पशु जनसंख्या से वनस्पति और जीव-जन्तुओं को खतरा बढ़ रहा है जो कि औद्योगिक क्षेत्र में वैश्वीकरण के कारण और भी गहराता जा रहा है। हमारे देश ने वृक्षारोपण द्वारा वृक्षों के नुकसान की भरपाई करने की कोशिश की है। यद्यपि वाइल्डलाइफ प्रोटेक्शन एक्ट समुचित रूप से सख्त है पर वैश्विक माँग और जरूरतों के कारण जीव-जन्तु जगत के संरक्षण में विफल रहा है। वन्य जीव व्यवसाय राक्षसी आयाम ले चुका है और शास्त्रों तथा नशीले पदार्थों के गैर कानूनी बाजार के बाद इसका तीसरा स्थान माना जाता है।

उन्होंने बताया कि ग्लोबल वार्मिंग एक और कटु सत्य है जिसके कारण बहुत सी वनस्पतियों और जीव जन्तुओं का अस्तित्व समाप्त हो सकता है। औद्योगिक अपशिष्ट, कूड़ा, मल प्रवाह तथा आफ-शोर ड्रिलिंग तथा तेल का रिसाव (आयल सिंपल) जैसे अन्य प्रदूषणों के कारण नदियों और सामुद्रिक पारिस्थितिकी-तंत्र पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है। उन्होंने बताया कि एक अनुमान के अनुसार हमारा समाज प्रतिवर्ष 40,000 करोड़ रुपये के मूल्य के वन्य उत्पादों के रूप में वनों से लाभान्वित होता है।

डॉ० पी०बी० गंगोपाध्याय, भा०व०से० (से०नि०) अपर महा निदेशक, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार ने “भारत की समृद्ध जैवविविधता के संरक्षण में चुनौतियाँ” विषय पर भाषण दिया। उन्होंने भारत की समृद्ध जैवविविधता और उसके संरक्षण की स्थिति पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि विश्व के 18 प्रमुख स्थलों में से दो भारत में— उत्तर पूर्व तथा पश्चिमी घाट में हैं। पौधों की 46,000 तथा जीवों की 81,000 प्रजातियों के साथ भारत विश्व की अभिलिखित प्रजातियों में से 7-8 प्रतिशत प्रजातियों का धारक है।

उन्होंने वर्ष 2000-2005 के दौरान वनोच्छादन की सर्वाधिक वार्षिक हानि वाले देशों का संक्षिप्त विवरण दिया और बताया कि जहाँ एक ओर विश्व के कई विकासशील देशों के वनाच्छादित क्षेत्रों में दशकीय हानि/कमी हुई है वहीं हमारे देश में वर्ष 1997-2007 के दौरान वनाच्छादित क्षेत्र में 23.12 लाख हेक्टेयर की दशकीय वृद्धि हुई है। उन्होंने सुंदर चित्रों के माध्यम से भारत के विविधतापूर्ण पारिस्थितिकीय तंत्र तथा विविधतापूर्ण वन्य जीवन की झलकियाँ भी प्रस्तुत कीं।

डॉ० गंगोपाध्याय ने भूमि-विपथन, अतिक्रमण, पशुओं का चराना, दावानल, अवैध कटान, वास स्थान का विघटन आदि जैसे वन्य जैव विविधता को खतरा पहुँचाने वाले खतरों पर भी प्रकाश डाला। अपने प्रस्तुतिकरण के अंत में उन्होंने सुझाव दिया कि अपने देश की जैवविविधता को बचाने के लिए संरक्षण तंत्र को सुदृढ़ करने तथा वन विभागीय समुदाय के साथ निकटतर संबंध को विकसित करने की जरूरत है। सौभाग्य से, समाज के सभी भागों में जैवविविधता के संरक्षणार्थ अनेक संसाधन तथा सी.ए.एम.जी. निधि को सम्मिलित करते हुए विभिन्न विकास अभिकरण उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त, 13वें वित्त आयोग से बाह्य सहायित परियोजनाओं से सहायता तथा राज्य योजना के संसाधनों की सहायता लेकर जैवविविधता संरक्षण की अधिकांश आवश्यकता की पूर्ति की जा सकती है।

प्रोफेसर आर० कुमार, अध्यक्ष, सेंटर फार इकोलोजिकल साइंसेज, इंडियन इंस्टीट्यूट आफ साइंस, बंगलौर ने अपने प्रस्तुतिकरण में भारत के वन-आच्छादन की प्रारिस्थिति पर वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि समस्त

उष्णकटिबंधीय वनों का 40 प्रतिशत हिस्सा उष्ण कटिबंधीय शुष्क वनों का है। उन्होंने भारत में शुष्क वनों से आ रहे काष्ठेतर वन्य उत्पाद के महत्व को रेखांकित किया और बताया कि भारत में शुष्क वनों से काष्ठेतर (नान टिम्बर) वन्य उत्पादों के द्वारा प्रतिवर्ष कई सौ करोड़ हजार डालर का राजस्व (निर्यात को मिलाकर) मिलता है।

पूर्वी भारत के शुष्क वनों में काष्ठेतर वन्य उत्पादों से राजस्व का शुद्ध मूल्य (प्राकृतिक) वास स्थान के आधार पर अनुमानतः 1000–1350 यू०एस० डालर था। वनों के निकट रहने वाले लगभग 5 करोड़ व्यक्ति अपने निर्वाह और नकद आमदनी के लिए काष्ठेतर वन्य उत्पादों पर निर्भर हैं।

मृदुमलाई, तमिलनाडु के एक अध्ययन के प्रस्तुतिकरण के माध्यम से उष्ण कटिबंधीय शुष्क वनों की कार्बन पृथक्करण क्षमता पर बल देते हुए उन्होंने “स्ट्रेस” एवं “डिस्टर्बैन्स” के संबंध में उष्ण कटिबंधीय शुष्क वनों के बारे में प्रचलित हाइपोथीसिस (प्राक्कलपना) को व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि आग की वर्तमान बारंबारता वनों को सवाना/ग्रासलैंड में बदल देगी। हाथी जैसे विशाल स्तनपायी एवं अन्य शाकाहारी पशु वनों को सवाना में बदल देंगे। आग और सूखा के स्ट्रेस (दबाव) के कारण वन जैव पुंज (बायोमास) से कार्बन स्टाक की हानि होगी। उन्होंने सूचित किया कि मृदुमलाई फारेस्ट डायनेमिक प्लाटों में वर्ष 1988 से 2008 के दौरान उल्लेखनीय पारिस्थितिकीय परिवर्तन हुए हैं और उक्त अवधि में प्रजातियों की संख्या 72 से बढ़कर 84 तथा भूमि के ऊपर का जैवपुंज 8673 से बढ़कर 9418 टन प्रति 50 हे० हो गया। इस क्षेत्र की सबसे बहुल प्रजातियां—*केडिया केलिसीना* (अंडरस्टोरी ट्री), *लाजर स्ट्रोएमिया माइक्रोकार्पा* (कैनोपी ट्री) तथा *हेलिकटेरेस आइसोरा* (शर्ब) हैं। मृदुमलाई के बारे में अपने निष्कर्ष में उन्होंने कहा कि उष्ण कटिबंधीय शुष्क वन प्रजाति सम्पन्न भले न हों पर उनका अपना सहज तात्त्विक मूल्य हैं पर पर्यावरणीय विभिन्नता तथा डिस्टर्बैन्स के संदर्भ में महत्वपूर्ण कार्बन सिंक हो सकते हैं। यू०एन० फ्रेमवर्क कन्वेंशन आन क्लाइमेट चेंज के अधीन नीतिपरक अंतर्राष्ट्रीय विचार-विमर्श के लिये इसका महत्वपूर्ण प्रभाव है।

जूलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया, कोलकत्ता के निदेशक, डॉ० के० वेंकटरमन ने “वन जैवविविधता संरक्षण” के संबंध में प्रमुख व्याख्यान दिया। उन्होंने बढ़ती हुई वैश्विक जनसंख्या तथा जैवविविधता की पोषणीय आवश्यकता को रेखांकित किया जिससे कि वन जैवविविधता के संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों के सावधानीपूर्वक उपयोग की आवश्यकता परिलक्षित होती है। “जैवविविधता” को परिभाषित करते हुए उन्होंने उसके तीन आयामों (रेन्ज) अर्थात् पारिस्थितिकीय तंत्र विविधता, प्रजाति विविधता तथा आनुवांशिकीय विविधता को स्पष्ट किया।

उन्होंने विश्व के साथ-साथ भारत में विद्यमान जैवविविधता का भी संक्षिप्त विवरण देते हुए बताया विश्व भर में वनस्पति एवं पशु जगत की 5 से 10 करोड़ प्रजातियां विद्यमान हैं जिसमें 10 लाख पशु (75 प्रतिशत कीट); 2,48,000 ऊँचे वृक्ष, 69,000 फंगस, 31,000 प्रोटोजोआ, 27,000 ऐलगी, 5,000 बैक्टीरिया और 1,000 वाइरस सम्मिलित हैं। इनमें से केवल 1.5 मिलियन प्रजातियों (17,70,000) की अब तक पहचान की गई है जब कि भारत में 91,000 पशु प्रजातियां; 45,000 पौधों की प्रजातियां; 850 बैक्टीरिया; फंगस की 14,500 प्रजातियां हैं।

वन वृक्षों का महत्व बताते हुए उन्होंने कहा कि इनमें औषधीय तथा कृषकीय महत्व भी है। जैवविविधता के क्षरण एवं परिवर्तनों उदाहरणार्थ; विलुप्त होना, जनसंख्या परिवर्तन, वितरण, प्रजातियों का संघटन, जेनेटिक-डाइवर्सिटी के बारे में अपने विचार रखे।

वनों को बचाने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि वन, पारिस्थितिकी सेवाएं (इकोसिस्टम सर्विसेज) उपलब्ध कराते हैं जो वैश्विक या भूमंडलीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए हितकारी है यथा; ऊर्जा प्रवाह

तथा रासायनिक चक्र में सहायता, मृदा के क्षरण (कटाव) को कम करना, जल का अवशोषण एवं निर्मोचन, जल तथा वायु का शुद्धिकरण, स्थानीय तथा क्षेत्रीय जलवायु को प्रभावित करना, वातावरण के कार्बन का भंडारण तथा जीव जगत के लिए प्राकृतिक वास सुविधा।

फ्रेमवर्क कन्वेंशन आन क्लाइमेट चेंज एण्ड फारेस्ट' के मुख्य उद्देश्यों को रेखांकित करते हुए डॉ० वेंकटरमन ने वन जैवविविधता के संरक्षण के लिये संरक्षण रणनीतियों पर वक्तव्य दिया। उन्होंने बताया कि विश्व खाद्य पदार्थ आपूर्ति का 90 प्रतिशत, 20 पौध प्रजातियों तथा घरेलू पशुओं/पालतू पशुओं की 14 प्रजातियों से आता है। अनिर्वहनीय वनक्षरण, बढ़ता हुआ भूमि क्षरण, प्राकृतिक वास के विघटन तथा जैव विविधता की हानि को वन पारिस्थितिकी तंत्र के लिए प्रमुख खतरा बताया। उन्होंने सुझाव दिया जैवविविधता संरक्षण, जलवायु परिवर्तन का प्रशमन और गरीबी उन्मूलन के लिए अत्यावश्यक वैश्विक मुद्दों के समाधान में पौधरोपण सहायक हो सकता है।

उन्होंने जलवायु परिवर्तन के शमन हेतु रणनीति के एक अंग के रूप में भारत द्वारा शुरू की गई वर्तमान गतिविधियों पर प्रकाश डाला यथा—

- उसके द्वारा यू०एन०एफ०सी०सी०सी० को 'वनों का निर्वहनीय प्रबन्धन' और 'वनरोपण एवं पुनः वनरोपण' विषय पर दिसम्बर 2008 में एक प्रतिवेदन दिया गया है।
- आर०ई०डी०डी० प्लस गतिविधियों के अंशदान/सहयोग का निर्धारण करने तथा अनुश्रवण करने के लिए क्रियाविधि एवं प्रक्रिया विकसित करने हेतु एक तकनीकी समूह बनाया गया है।
- एक राष्ट्रीय आर०ई०डी०डी० प्लस समन्वय अभिकरण स्थापित किया जा रहा है।
- नेशनल फारेस्ट कार्बन एकाउन्टिंग प्रोग्राम को संस्थागत रूप दिया जा रहा है।
- रियो के बीस वर्षों के साथ समरूपता के लिए वर्ष 2012 में 'कन्वेंशन आन बायोलॉजिकल डाइवर्सिटी' की 'कान्फ्रेंस आफ पार्टीज' का आयोजन भारत कर रहा है।

अपने वक्तव्य के समापन में उन्होंने ग्रीन इण्डिया मिशन के अधीन भारत के वानिकी कार्यक्रम पर कुछ प्रकाश डाला। इस मिशन की प्रमुख गतिविधियां निम्नवत् हैं ;

- अपने वनाच्छादन क्षेत्र के परिमाण को बढ़ाने मात्र की अपनी पारंपरिक सोच के अलावा उसकी गुणवत्ता को बढ़ाने तथा इकोसिस्टम गुड्स और सर्विसेज के प्रावधानों को सुधारने हेतु मौलिक परिवर्तन का प्रस्ताव।
- कार्बन पृथक्करण लक्ष्यों की पूर्ति हेतु मात्र पौधरोपण पर सारा ध्यान केन्द्रित न करते हुए, हरियाली के बारे में एक परिपूर्ण या सम्पूर्णतावादी सोच अपनाने का प्रस्ताव। जैवविविधता के संवर्धन, पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली तथा प्राकृतिक वास की विविधता पर ज्यादा स्पष्ट रूप से और अधिक ध्यान केन्द्रित किया जाना है।
- स्वायत्ता और विकेन्द्रीकरण पर सोच समझ कर ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। विलंब और जड़ता को कम करने के साथ-साथ जवाबदेही को सुनिश्चित करने की दृष्टि से इस मिशन को एक स्वशासी संगठनात्मक ढांचे के माध्यम से कार्यान्वित किया जाएगा।
- कार्यान्वयन स्थानीय समुदायों को केन्द्र में रख कर किया जाएगा तथा ग्राम स्तर पर मिशन के क्रियान्वयन का पर्यवेक्षण करने हेतु ग्राम सभा एक छत्रक संस्था के रूप में कार्य करेगी।

- संयुक्त वन प्रबंधन समिति का पुर्नगठन ग्राम सभा की समितियों के रूप में किया जाएगा। यह बात इस तथ्य की संगति में है कि देश में लगभग 20 करोड़ व्यक्तियों से अधिक लोगों के लिए वन उनकी जीविका का स्रोत है और इसलिए उनकी सहभागिता का केन्द्रस्थता महत्वपूर्ण है।

डॉ० डी० के० सिंह, प्रभारी निदेशक, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, कोलकाता ने भारत की पादप विविधता पर एक व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने प्रस्तुतिकरण में वैश्विक बायोडाइवर्सिटी हॉटस्पॉट व भारत के हॉटस्पॉट व बायो जियोग्राफिकल स्थिति का संक्षिप्त विवरण दिया। इसके अलावा उन्होंने इकोसिस्टम, प्रजाति व अनुवांशिक विविधता के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला। डॉ० सिंह के अनुसार भारत में लगभग 5,725 प्रजातियां देशज हैं जिसमें 3,471 हिमालयी, 2,051 पेनिनसुलर भारत व 239 अण्डबार निकोबार क्षेत्र से हैं।

उन्होंने एन्जियोस्पर्म विविधता व पुष्पीय पौधों की परम्परागत औषधि में प्रयोग के रोचक पहलुओं का वर्णन किया। उन्होंने आर्थिक महत्व के कवक और शैवाल के बारे में भी बताया। उन्होंने भारत की जैवविविधता का तथ्यपत्र निम्नानुसार प्रस्तुत किया:—

- 3 बायो जियोग्राफिकल रिएल्म, 10 बायोजियोग्राफिक जोन, 26 बायोटिक प्राविन्स, 426 बायोम मय 16 मुख्य व 221 उप एग्रोकलामेटिक जोन।
- पौध जन्तु व सूक्ष्म जीवों की 1,27,000 प्रजातियाँ; लगभग 4,00,000 प्रजातियों की अभी पहचान होनी है।
- पुष्पीय पौधों की 17,709 प्रजातियाँ जिनमें इन्टरस्पेसिफिक भिन्नता बहुत अधिक है।
- आम की 5,000 अभिलेखित वैराइटी।
- धान की 60,000 से अधिक अभिलेखित लैंडरेस।
- उच्च पौध प्रजातियों की लगभग 33 प्रतिशत प्रजातियां देशज हैं।
- 167 कृषि-औद्योगिक फसलें।
- 320 वन्य प्रजातियां फसली पौधों के करीबी हैं।
- मुख्य व गौण पौध फसलों की 25 प्रजातियाँ डोमेस्टिकेटेड हैं।
- 1,500 वन्य खाद्य पौध प्रजातियाँ ग्रामवासियों द्वारा प्रयोग की जाती हैं।
- 3,000 औषधीय प्रजातियों जिसमें 85 प्रतिशत प्रजातियां जंगली हैं।

उन्होंने बताया कि आदिवासी लोग 3,900 पौध प्रजातियाँ खाने के रूप में, 8,000 औषधि के रूप में मय 1,75,000 विशिष्ट उपयोगों के, 525 प्रजातियाँ नाशीजीव के रूप में, 550 प्रजातियां रेशे के रूप में तथा 475 प्रजातियों का गोंद, रेजिन और रंग के रूप में उपयोग करते हैं।

अन्त में डॉ० सिंह ने बताया कि वन किसी भी भौमिक इकोसिस्टम से अधिक जैविक तौर पर वैविध्यपूर्ण होते हैं। वनों के संरक्षण और पोषणीय उपयोग से हमारे दो तिहाई भौमिक पौधों और जन्तुओं की रक्षा होगी। उन्होंने सुझाया कि जैवविविधता जंगलों के स्वास्थ्य और जीवन्तता देकर अनेक प्रकार के इकोसिस्टम सेवार्यें देती हैं जो मानव के जीविका और बेहतरी के लिए आवश्यक है इसलिए इनके महत्व को समझना और इनके मूल्य को समझना साथ ही साथ मानव के बेहतरी और विकास के लिए समझना जरूरी है।

पृथ्वी दिवस, 20 अप्रैल 2011

20 अप्रैल 2011 को पृथ्वी दिवस मनाया गया और इस अवसर पर उ०प्र० के लखीमपुर और बाराबंकी जिलों के स्कूलों में "ग्राम मानचित्रण प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। कुल मिलाकर प्रतियोगिता में 59 विद्यार्थियों ने भाग लिया जिनमें से लखीमपुर से 04 और बाराबंकी से 03 विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

विश्व पर्यावरण दिवस, 05 जून 2011

05 जून, 2011 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। (i) कक्षा 6-8 और (ii) कक्षा 9-12 के विद्यार्थियों के लिए 75 प्रश्नों की एक क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रश्न पशुओं, वनस्पतियों, महत्वपूर्ण दिवसों, पर्यावरण और संरक्षण पर आधारित थे। विभिन्न विद्यालयों के कुल प्रतिभागियों की संख्या 86 थी जिनमें से कक्षा 6 से 8 के 06 विद्यार्थियों और कक्षा 9 से 12 के 04 विद्यार्थियों को श्री एस कुमार, संयोजक, आरएससी, प्रो० नित्यानन्द, पूर्व निदेशक सी०डी०आर०आई०, और एन०सी० मेहरोत्रा, निदेशक, बी०एस०आई०पी०, लखनऊ की उपस्थिति में पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। रीजनल साइंस सिटी में इस कार्यक्रम को आयोजित करने में जन्तु विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय ने सहायता की।



विश्व वेटलैण्ड दिवस, 02 फरवरी 2012

प्रत्येक वर्ष 02 फरवरी विश्व वेटलैण्ड दिवस (डब्लू०डब्लू०डी०) होता है। इस विशेष तिथि का चुनाव इसलिए किया गया है क्योंकि यह 02 फरवरी 1971 को ईरानी शहर रामसर में वेटलैण्ड पर समझौता के अंगीकरण को चिन्हित करता है। प्रत्येक वर्ष रामसर समझौता एक विषयवस्तु का चयन करता है और विशिष्ट प्रकार की वेटलैण्ड अथवा वेटलैण्ड प्रबन्धन के पहलुओं पर जागरूकता उत्पन्न करता है। इस वर्ष चयनित विषयवस्तु 'वेटलैण्ड और पर्यटन' थी। इस वर्ष का नारा "वेटलैण्ड पर्यटन: एक महान अनुभव" है। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे निबन्ध, इश्तेहार और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

निबन्ध प्रतियोगिता

कक्षा 6 से 8 के लिए विषय था "क्या हमारे लिए वेटलैण्ड महत्वपूर्ण है?" 5 विद्यालयों के कुल 38 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

कक्षा 9 से 12 के लिए विषय था "वेटलैण्ड संरक्षण में इकोटूरिज्म की चुनौतियाँ"। 7 विद्यालयों के कुल 32 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

महाविद्यालय के छात्रों के लिए विषय था "भारत के वेटलैण्ड में सस्टेनेबल पर्यटन-महत्व, प्रचलित रुझान और चुनौतियाँ"। 6 महाविद्यालयों से 18 छात्रों ने हिस्सा लिया।

पोस्टर प्रतियोगिता

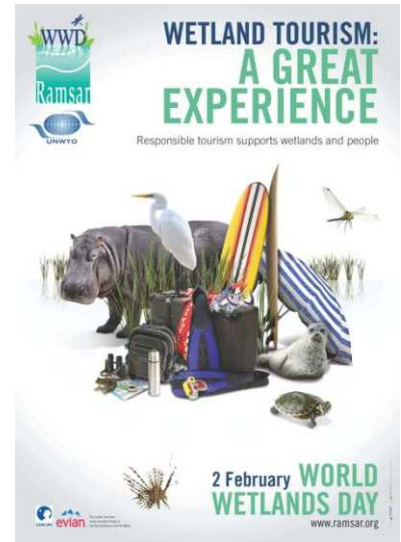
कक्षा 9 से 12 के लिए विषय था "इकोटूरिज्म इन वेटलैण्ड"। 3 विद्यालयों से कुल 16 छात्रों ने हिस्सा लिया था। पुरस्कार विजेता निम्नलिखित थे:-

प्रथम पुरस्कार- रचित पाण्डे
कक्षा-12, रिवरसाइड एकेडमी, लखनऊ



CONVENTION ON WETLANDS

(Ramsar, Iran, 1971)





द्वितीय पुरस्कार— स्वर्णिमा सिंह
कक्षा—9ई, एच०ए०एल० स्कूल, लखनऊ

सांत्वना पुरस्कार— आरजू परवीन
कक्षा—9ई, एच०ए०एल० स्कूल, लखनऊ

महाविद्यालय के छात्रों के लिए विषय था "सस्टेनेबल टूरिज़्म इन वेटलैण्ड्स"। 5 महाविद्यालयों से कुल 14 छात्रों ने हिस्सा लिया।



1. प्रथम पुरस्कार— जूली उपाध्याय
बी०एससी०, पं० दीनदयाल उपाध्याय राजकीय पी०जी० कालेज, लखनऊ
2. द्वितीय पुरस्कार— सौम्या दलेला
बी०बी०ए० टूरिज़्म, प्र० वर्ष, इन्स्टीट्यूट ऑफ टूरिज़्म स्टडीज, लखनऊ विश्वविद्यालय
3. तृतीय पुरस्कार— अनुपमा श्रीवास्तव
एम०एससी०, केमेस्ट्री, लखनऊ विश्वविद्यालय
4. सांत्वना पुरस्कार— प्रगति सिंह
बी०काम०, तृतीय वर्ष, पं० दीनदयाल उपाध्याय राजकीय कन्या पी०जी० कालेज, लखनऊ

वाद-विवाद प्रतियोगिता

महाविद्यालय के छात्रों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता हेतु विषय था "क्या वेटलैण्ड क्षेत्रों में इकोटूरिज्म संभव है?" (इज इकोटूरिज्म पासिबल इन वेटलैण्ड्स) लखनऊ विश्वविद्यालय के 3 महाविद्यालयों / संस्थानों के कुल 9 छात्रों ने हिस्सा लिया।

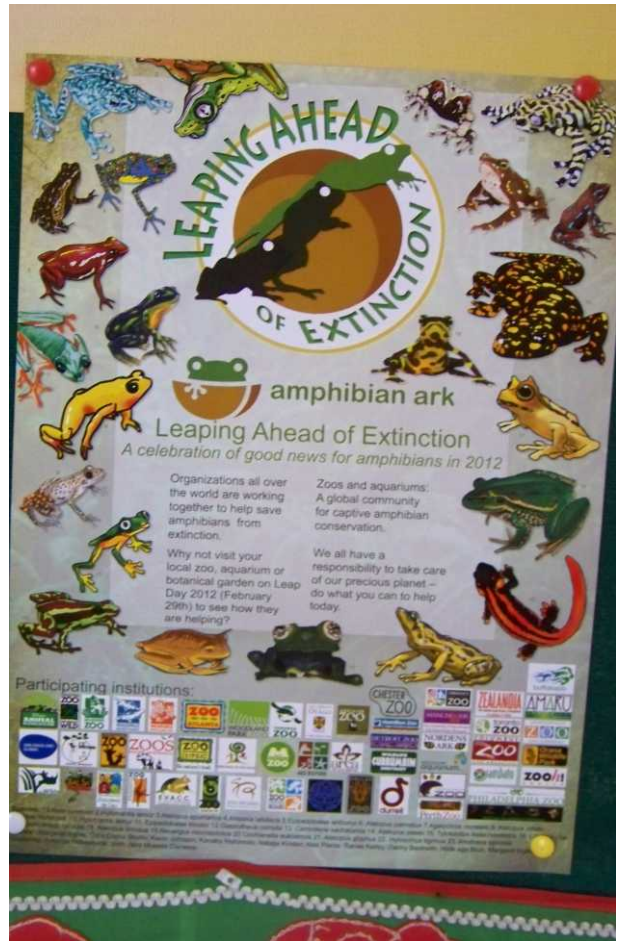


लीप दिवस, 29 फरवरी 2012

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड ने जन्तु विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, रीजनल साइंस सिटी लखनऊ, जू आउटरीच आर्गनाइजेशन जू और एम्फीबियन नेटवर्क आफ साउथ एशिया (एएनएसए), कोयम्बटूर, तमिलनाडु भारत के साथ 29 फरवरी 2012 को लीप दिवस का आयोजन किया।

कार्यक्रम का आयोजन कक्षा 5 से 8 तक के छात्रों को सम्मिलित करते हुए रीजनल साइंस सिटी, अलीगंज, लखनऊ में किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य उभयचर विषयों पर आधारित विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से छात्रों में उभयचर संरक्षण से संबंधित जागरूकता को बढ़ाना था। लगभग 162 छात्रों ने क्विज में प्रतिभाग किया। उभयचर संरक्षण पर 190 छात्रों ने नारे लिखे 50 से अधिक छात्रों ने मेढक कूद में प्रतिभाग किया, 126 छात्रों ने आर्ट प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया और 4-4 छात्रों के 8 समूहों ने पजल (पहेली) बनाने में भाग लिया। कुल मिलाकर कार्यक्रम में 300 से अधिक छात्रों ने प्रतिभाग किया। उभयचरों पर कुल 200 से अधिक पम्पलेट का वितरण छात्रों और अध्यापकों में किया गया।





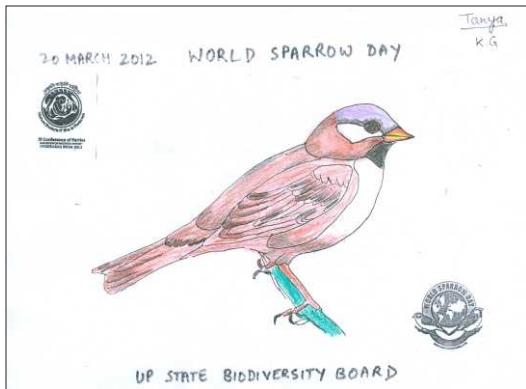
29 फरवरी 2012 को 'लीप दिवस' कार्यक्रम में भाग लेते विद्यार्थी



29 फरवरी 2012 को 'लीप दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते विद्यार्थी

विश्व गौरैया दिवस 20 मार्च 2012

हाउस स्पैरो (*पासर डामेस्टिकस*) जिसे हिन्दी में गौरैया और उर्दू में चिड़िया के रूप में जाना जाता है, दुर्भाग्य से इस समय लुप्तप्राय प्रजातियों में है। घरेलू गौरैया के घटने के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने के लिए विश्व भर में 20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस (डब्ल्यूएसडी) मनाया गया है और जीवित रहने के लिए अपने दैनिक संघर्ष में इस प्रजाति को हो रही समस्याओं पर प्रकाश डाला गया। विश्व गौरैया दिवस मनाने का मूलाधार न केवल एक दिन के लिए स्मरणोत्सव का आयोजन है अपितु शहरी जैवविविधता के साथ साथ गौरैया संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करने हेतु इसे प्लेटफार्म की तरह प्रयोग करना भी है। समाचार पत्रों और बोर्ड की वेबसाइट www.upsbdb.org के माध्यम से जनसाधारण से अनुरोध किया गया था कि वे 20 मार्च 2012 को सुबह 07.00 से 07.30 बजे अपने अपने घरों से बाहर जायें और अपने घरों के आस-पास प्रत्येक व्यक्ति द्वारा देखी गयी गौरैया की संख्या को गिनें और इसे [upstatebio diversityboard@gmail.com](mailto:upstatebiodiversityboard@gmail.com) पर बोर्ड को भेज दें। इसके अतिरिक्त बोर्ड की वेबसाइट के माध्यम से घरेलू गौरैया की तस्वीर रंगने पर एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस संबंध में लखनऊ के विभिन्न विद्यालयों/महाविद्यालयों से कुल 73 प्रविष्टियां प्राप्त हुई थीं। शहरी जैवविविधता के बारे में जागरूकता फैलाने के हमारे प्रयासों का समर्थन उत्साह वर्धक रहा है।



प्रथम पुरस्कार- तान्या
वर्ग कक्षा नर्सरी से प्रेष



आर०एफ० जैदी की प्रतिक्रिया

(ईमेल : r.f.zaidi@gmail.com)

मेरी माँ द्वारा गौरैया पर लिखित एक कविता निम्न प्रकार है-

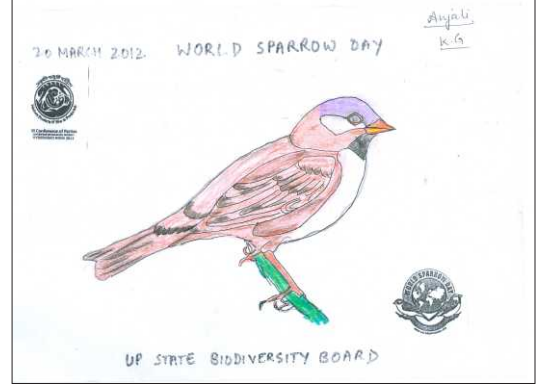
चहचहाती गौरैया
सबको भाती गौरैया
कितनी प्यारी सी सूरत,
भोली-भाली सी मूरत
हम जो दाना खिलाएं,
अपने घर में बुलाएं
फुर-फुर आती गौरैया,
सबको भाती गौरैया
मेरा जीवन बचाओ
मेरी रक्षा को आओ
गुनगुनाती गौरैया
सबको भाती गौरैया
न नजर आऊँगी मैं,
लुप्त हो जाऊँगी मैं
ये बताती गौरैया
सबको भाती गौरैया
चहचहाती गौरैया
सबको भाती गौरैया . . .

- मेरी माँ सईदा अस्करी द्वारा लिखित

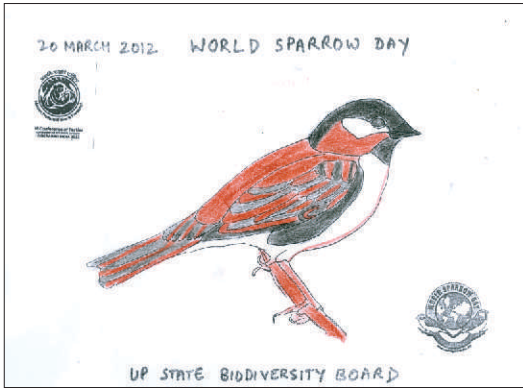
गौरैया चित्र में रंग भरने की प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेता निम्न हैं –



प्रथम पुरस्कार— फलक मोहसिन
वर्ग कक्षा प्रथम से पांचवीं



द्वितीय पुरस्कार— अंजली शेखर
वर्ग कक्षा नर्सरी से प्रेप



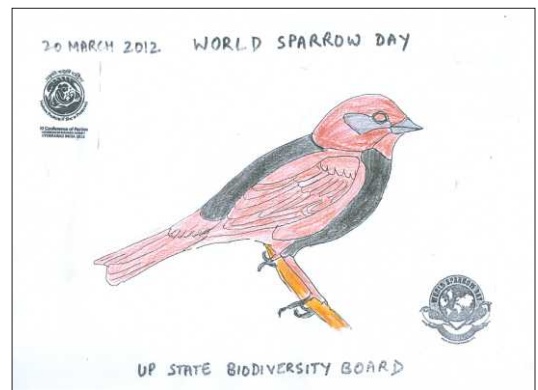
तृतीय पुरस्कार— सचिन कुमार
वर्ग कक्षा प्रथम से पांचवीं



तृतीय पुरस्कार— हर्षित रंजन
वर्ग कक्षा नर्सरी से प्रेप



प्रथम पुरस्कार— शैली सिंह
वर्ग कक्षा छठी से नौवीं



द्वितीय पुरस्कार— अनुपम
वर्ग कक्षा प्रथम से पांचवीं

मानव संसाधन विकास

बोर्ड के कर्मचारीगण और अधिकारियों ने वर्षभर भिन्न भिन्न कार्यशालाओं/सम्मेलनों/प्रशिक्षणों में प्रतिभाग किया, जिसका विवरण निम्न प्रकार है:—

अप्रैल-जून, 2011

1. 05 जून 2011 को क्षेत्रीय शहरी और पर्यावरणीय अध्ययन केन्द्र लखनऊ विश्वविद्यालय में कार्यशाला : डॉ० राम जी श्रीवास्तव, वरिष्ठ वैज्ञानिक, उ०प्र०रा०जै०वि० बोर्ड ने “वन्य जैवविविधता: प्रास्थिति, खतरे और संरक्षण रणनीति” पर एक प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत किया।

जुलाई-सितम्बर, 2011

2. दिनांक 05-06 सितम्बर, 2011 को गोरखपुर, ग्राम भौवापार में जैवविविधता पंजिका बनाने में सुविधाएं देने हेतु श्री आर.के. दूबे, सहायक वन संरक्षक, ने इस गाँव का भ्रमण किया।

अक्टूबर-दिसम्बर 2011

3. इलाहाबाद के बायोवेद अनुसंधान संस्थान और चित्रकूट दिनांक 09-10 अक्टूबर 2011। श्री आर.के. दूबे, स०व०सं०, ने बायोवेद रिसर्च सोसाइटी, इलाहाबाद और चित्रकूट में बैहार गाँव का भ्रमण इस गाँव में पी. बी०आर० के बनाने में ग्रामवासियों की मदद करने के लिए किया।
4. चित्रकूट 16 अक्टूबर 2012, श्री आर०के० दूबे, स०व०सं० ने रामचरित मानस से सम्बन्धित वनस्पतियों के रोपण में स्थानीय प्राधिकारियों के मार्गदर्शन हेतु चित्रकूट का भ्रमण किया।
5. बंगलौर में जन जैवविविधता पंजिका पर राष्ट्रीय परामर्श व कार्यशाला 22-23 दिसम्बर 2012, श्री आर०के० दूबे, स०व०सं० इस बैठक में उपस्थित हुए। इसमें निम्नलिखित प्रमुख बिन्दु निम्नवत् थे:
 1. पी०बी०आर० का क्या कार्य होना चाहिए? घटक और अभिगम।
 2. एन०बी०ए० से चालू पी.बी.आर. प्रारूप के विषयवस्तु की संवीक्षा और तैयार करने की प्रक्रिया।
 3. आई०पी०आर०, टी०के० का निर्गमन और पी०बी०आर० और ए०बी०एस० में विकास।
 4. पी०बी०आर० की क्षमता आवश्यकताएं, और
 5. पी०बी०आर० की जागरूकता बढ़ाना
6. डॉ० राम जी श्रीवास्तव, वरिष्ठ वैज्ञानिक 29 से 31 दिसम्बर 2011 के दौरान लखनऊ विश्वविद्यालय में जन्तु विज्ञान की अखिल भारतीय कांग्रेस में उपस्थित हुए।

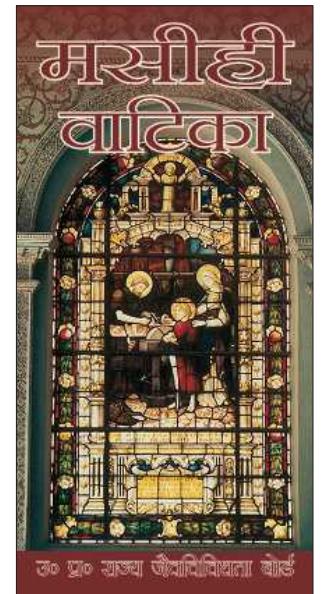
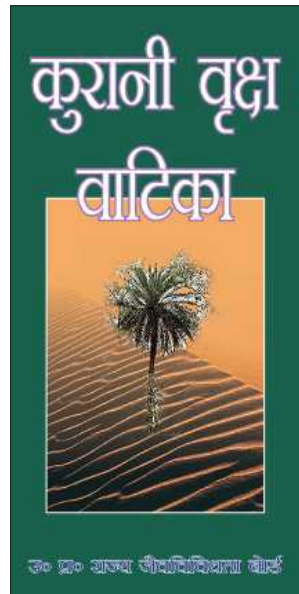
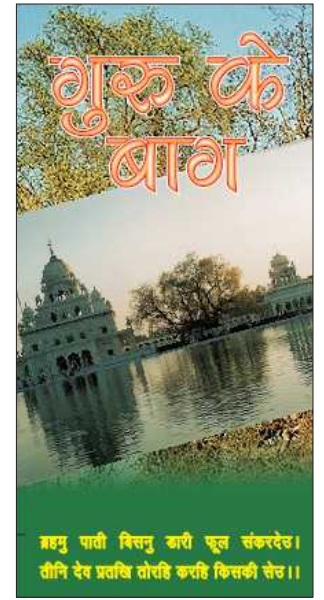
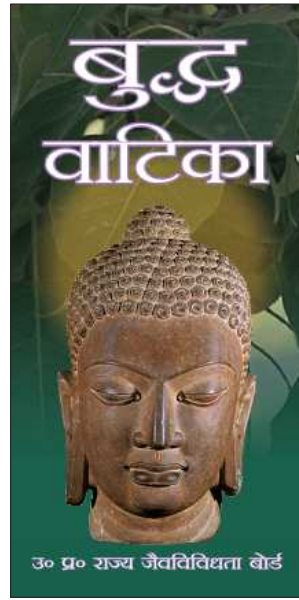
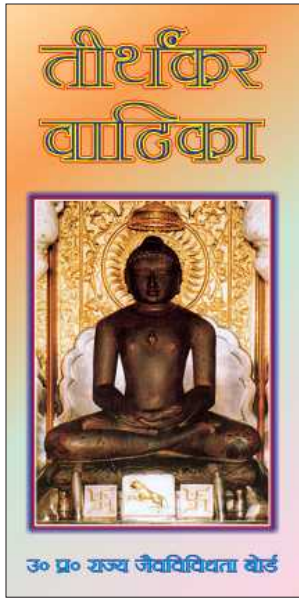
जनवरी-मार्च 2012

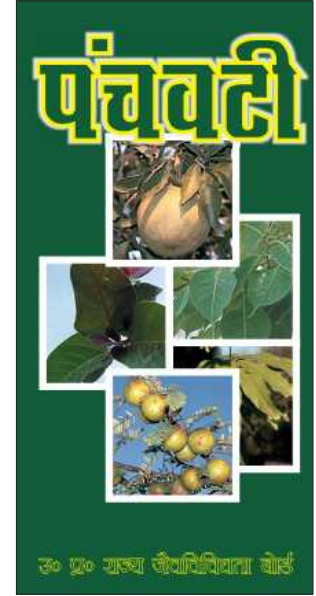
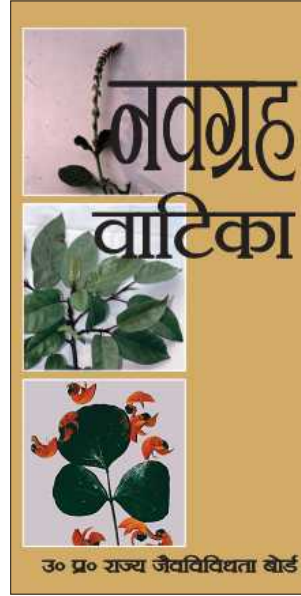
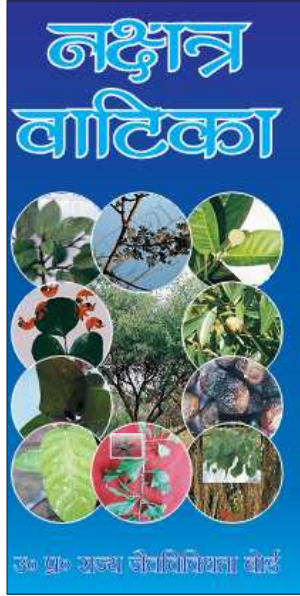
7. दिनांक 13-14 जनवरी 2012 को नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय व जौनपुर का भ्रमण श्री आर०के० दूबे, स०व०सं०, ए०के० कश्यप, उप वन राजिक, और सन्तोष कुमार, वन दरोगा द्वारा किया गया। जौनपुरी मूली पर सूचनाएं संग्रहित करने हेतु जौनपुर का भ्रमण किया।
8. दिनांक 19 जनवरी 2012 को एकेडमिक स्टाफ कालेज, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित जन्तु विज्ञान पर तीन सप्ताह की पुनश्चर्या पर कालेज और विश्वविद्यालय के अध्यापकों हेतु "जैवविविधता संरक्षण" पर डॉ० राम जी श्रीवास्तव, वरिष्ठ वैज्ञानिक, उ०प्र०रा०जै०वि० बोर्ड ने अतिथि भाषण दिया।
9. दिनांक 27-28 जनवरी 2012 को चेन्नई में राष्ट्रीय जैवविविधता प्राधिकरण द्वारा 7वीं राज्य जैवविविधता बोर्ड की बैठक का आयोजन किया गया। श्री पवन कुमार, सदस्य सचिव, उ०प्र०रा०जै०वि० बोर्ड और श्री आर०के० दूबे, स०व०सं० इस बैठक में उपस्थित हुए। इसमें निम्न विषयों पर वृहद् विचार विमर्श सम्मिलित थे: अधिनियमों और नियमों को प्रभावशाली ढंग से लागू किए जाने हेतु राज्य नियमों, मार्ग निर्देशों, उद्देश्यों की समीक्षा, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दे (सांविधिक, कानूनी और परामर्शी) क्षमता और जागरूकता आवश्यकताएं और कॉप-11 का वितरण।
10. परंपरागत नृजाति औषधियां, जैवविविधता और इसके संरक्षण पर विकासात्मक गतिविधियों की राष्ट्रीय अध्ययन गोष्ठी दिनांक 17-19 मार्च 2012 का आयोजन संयुक्त रूप से मानव जाति जीव विज्ञान संस्थान, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर और राष्ट्रीय वानस्पतिक अनुसंधान संस्थान द्वारा किया गया। इस अध्ययन गोष्ठी में डॉ० राम जी श्रीवास्तव, वरिष्ठ वैज्ञानिक, उ०प्र०रा०जै०वि० बोर्ड और श्री आर०के० दूबे, स०व०सं०, उ०प्र०रा०जै०वि० बोर्ड उपस्थित हुए।

प्रकाशन

फोल्डर

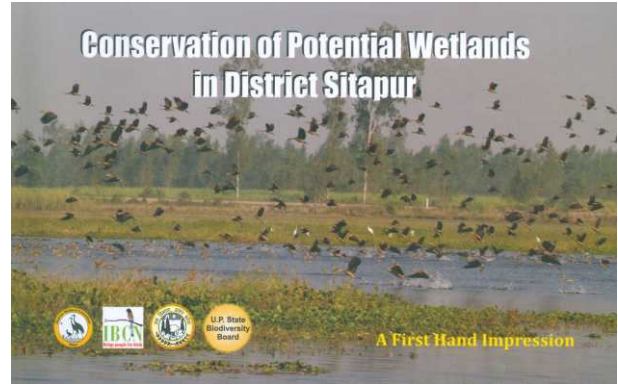
बोर्ड द्वारा 9 फोल्डर प्रकाशित किये गए। फोल्डरों का विस्तृत विवरण निम्नलिखित वेबसाइट पर उपलब्ध है:—
<http://www.upsbdb.org/brochures.php>





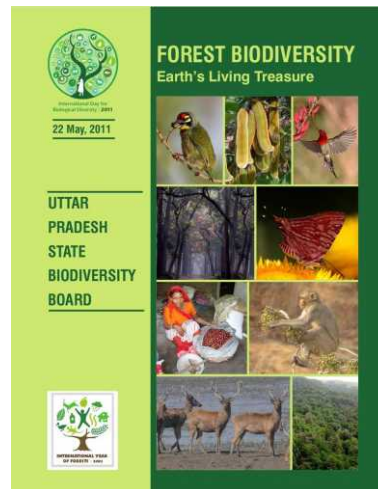
पुस्तक/स्मारिका

1. उ०प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड, लखनऊ द्वारा "कन्जरवेशन आफ पोटेन्शियल वेटलैण्ड्स इन डिस्ट्रिक्ट सीतापुर— ए फर्स्ट हैंड इम्प्रेसन" पर एक पुस्तक प्रकाशित की गई।



2. आई०डी०बी० के अवसर पर स्मारिका

दिनांक 22 मई 2011 को आई० डी० बी० 2011 संगोष्ठी पर एक स्मारिका निकाली गई थी। इसमें वन जैवविविधता पर 25 लेख हैं और इसकी साफ्ट कापी बेवसाइट <http://www.upsbdb.org/content1.php>, पर उपलब्ध है।



संजय राजीव एण्ड कं०

चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स

प्रथम तल, वाई.एम.सी.ए.काम्प्लेक्स, 13 राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ-226001 टेलीफोन नं० (0522) 2209402
ई मेल: myca.lucknow@gmail.com

लेखा परीक्षक की रिपोर्ट

सदस्यगण

उ०प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड

लखनऊ

इस रिपोर्ट से संलग्न, दि० 31.03.2012 को समाप्त हो रहे वर्ष के अंतिम लेखाओं का पीरक्षण हमारे द्वारा किया गया है। ये वित्तीय विवरण प्रबंध तंत्र का दायित्व है। हमारा दायित्व इस वित्तीय विवरण के संबंध में, अपनी लेखा-परीक्षा के आधार पर अपना अभिमत व्यक्त करना है।

1. भारत में सामान्यतया स्वीकृत लेखा परीक्षण-मानकों के अनुसरण में हमारे द्वारा लेखा परीक्षण किया गया। इन मानकों की अपेक्षा है कि हम लेखा परीक्षण को इस ढंग से नियोजित तथा संपन्न करें जिससे इस बात का युक्तियुक्त आश्वासन हो जाय कि वित्तीय विवरणों में कोई सारवान दुष्कथन नहीं हैं। किसी लेखा-परीक्षण में परीक्षण आधार पर, धनराशि के सम्पर्क साक्ष्य और वित्तीय विवरणों में प्रकटीकरण की जाँच सम्मिलित होती है। किसी लेखा-परीक्षा में प्रबंध तंत्र द्वारा प्रयुक्त लेखा सिद्धान्त तथा किये गए महत्वपूर्ण आकलनों के निर्धारण के साथ साथ समग्र वित्तीय विवरण प्रस्तुतिकरण का मूल्यांकन भी सम्मिलित होता है। हमारा विश्वास है कि हमारा लेखा परीक्षा हमारे मत के लिये समुचित आधार उपलब्ध करायेगा।
2. लेखाओं से संलग्न टिप्पणियों के साथ अग्रतर सपठित हमारा प्रतिवेदन है:-
 - क- अपने सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुरूप हमने वे सभी सूचनायें और स्पष्टीकरण प्राप्त कर ली हैं जो लेखा परीक्षा हेतु आवश्यक हैं।
 - ख- हमारी राय में, जैसाकि इन लेखा-पुस्तिकाओं के परीक्षण से प्रकट होता है, बोर्ड द्वारा यथा अपेक्षित रूप से लेखा-पुस्तिकाओं का रख-रखाव किया गया है।
 - ग- प्राप्तियां और भुगतान लेखा, आय एवं व्यय लेखा व तुलन पत्र जो इस रिपोर्ट के साथ निस्तारित किये गए हैं वे लेखा-पुस्तिकाओं से मेल खाती हैं और उनकी सत्य व सही तस्वीर प्रस्तुत करती हैं।
 - घ- हमारे विचार से और हमारी सर्वोत्तम सूचना और हमको दिये गए स्पष्टीकरणों के अनुसार, टिप्पणियों के साथ पठित उक्त लेखा अपेक्षित रीति में यथा अपेक्षित सूचना / जानकारी उपलब्ध कराते हैं और भारत में सामान्यतया स्वीकृत लेखा-सिद्धान्तों के अनुरूप सत्य व सही तस्वीर प्रस्तुत करते हैं।

लखनऊ

24.05.2012

कृते संजय राजीव कं०

चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स

(संजय कु० भूटानी)

महत्वपूर्ण लेखा नीतियां और लेखा टिप्पणियां

1. बोर्ड लेखांकन की नकद प्रणाली का अनुकरण करता है तथा नकद आधार पर आय एवं व्यय को मान्यता देता है।
2. सावधि जमा पर ब्याज का लेखांकन, वास्तविक प्राप्ति आधार पर उनकी परिपक्वता पर किया गया है।
3. लेखाओं की तैयारी हिस्टारिकल कास्ट के आधार पर की गई है अन्यथा संदर्भित नहीं की गई लेखांकन नीतियां सामान्यतया स्वीकृत लेखांकन सिद्धान्तों के अनुरूप हैं।
4. जैवविविधता दिवस पर आयोजित संगोष्ठी पर किए गये व्यय जो प्रभागीय वनाधिकारी, अवध के माध्यम से हुए व्ययों के संबंधित डी०एफ०ओ० से प्राप्त उपयोगिता प्रमाण-पत्रों के आधार पर लेखांकित किया गया है।
5. गोरखपुर में बायो पार्क (जैव उद्यान) पर डी०एफ०ओ० गोरखपुर द्वारा व्यय उपगत किये गए हैं। उनके उपयोगिता (प्रमाणक) संबंधित कार्यालय से प्राप्त कर लिये गए हैं।
6. जैवविविधता से संबंधित परियोजनाओं के लिए विभिन्न अभिकरणों/विभागों को वर्ष के दौरान किये गए कुल भुगतानों को सुसंगत वर्ष हेतु व्यय के रूप में लिया गया है।
7. स्थिर अस्तियों को अधिग्रहण की लागत पर दिखाया गया है।
8. स्थिर अस्तियों पर मूल्य हासको, आयकर अधिनियम के अधीन विहित दरों पर डब्लू०डी०वी० के आधार पर दिखाया गया है।
9. लेखा बही/पुस्तिका के समापन स्टाक (क्लोजिंग स्टाक) का लागत (मूल्य) पर मूल्यांकित किया गया है।
10. यू०पी०एस०आई०सी० के पुनरीक्षित अंतिम प्राक्कलन के अनुसार फर्नीचर एवं फिक्सचर की लागत धनराशि ₹ 1,73,688/- को 2010-2011 में कार्यालय अनुरक्षण पर प्रभारित किया गया है तथा उसे क्रेडिटिंग द कैपिटल, फंड, खाते से कैपिटलाईज पंजीकृत किया गया है।

लखनऊ
24.05.2012

कृते- संजीव राजीव एण्ड कं
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स
ह०/-
(संजय भूटानी)

कृते- उ०प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड
ह०/-
(पवन कुमार)
सचिव

वित्त एवं लेखा

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, लखनऊ

वि० वर्ष 01.04.2011 से 31.03.2012 की अवधि हेतु प्राप्ति एवं भुगतान लेखा

प्राप्तियां	धनराशि	भुगतान	धनराशि
आरंभिक (शेष) जमा:		वेतन और भत्ते	407,692.00
रोकड़ नकद/हस्ते रोकड़	113.00	कार्यालय किराया	1304,349.00
बैंक में जमा	<u>17,48,219.00</u>	बिजली, ऊर्जा और ईंधन	140,625.00
		कर्मचारी वाहन	778,556.00
सरकार से प्राप्त अनुदान		टेलीफोन और इंटरनेट	119,964.00
राज्य सरकार से	2,500,000.00	परियोजनाओं, अनुसंधान, आंकड़ा संग्रह और प्रलेखीकरण	4,392,613.00
केन्द्रीय सरकार से	950,000.00	पब्लिक आउटरीच प्रोग्राम हेतु डी०एफ०ओ० गोरखपुर	270,000.00
		चल रहे पी०बी०आर० क्रिया कलाप	147,242.00
दान और विज्ञापनो से प्राप्तियां	10,36,500.00	जैवविविधता जागरूकता कार्यक्रम	17,468.00
सावधि जमा पर ब्याज	12,853,483.00	वेब साइट-मेन्टेनेन्स	30,000.00
स्टेट बैंक आफ पटियाला से ब्याज	13,190.00	कम्प्यूटर रनिंग और मेन्टेनेन्स	67,659.00
विजया बैंक से ब्याज	5,579.00	लेखा प्रभार	13,500.00
पंजान नेशनल बैंक से ब्याज	213,032.40	लेखा परीक्षा फीस	24,302.00
पुस्तक बिक्री	65,700.00	कार्यालय व्यय	52,958.00
सावधि जमा की परिपक्वता	137,287,047.00	पिकप भवन वेलफेयर सोसायटी को मेन्टेनेन्स भुगतान	36,180.00
प्रकीर्ण प्राप्ति	685.00	अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस, 2011	879,056.00
		समाचार पत्र और पत्रिकायें	6,888.00
		डाक और कोरियर	9,277.00
		बोर्ड मीटिंग और अन्य बैठकें	58,043.00
		जनशक्ति की आपूर्ति	1,83,792.00
		कार्यालय स्टेशनरी	22,626.00
		वार्षिक रिपोर्ट एवं अन्य पत्रकों (ब्रोशर) की तैयारी	2,37,891.00
		प्रोजेक्टर क्रय	82,912.00
		कम्प्यूटर क्रय	13,600.00
		हार्डडिस्क क्रय	21,750.00
		पुस्तकालय हेतु पुस्तक क्रय	2,590.00
		क्रय की गयी अस्तियों हेतु यू०पी०आई०सी० को भुगतान	97,370.00
		बैंक-प्रभार	26,468.00
		आकस्मिकता	18,920.00
		स्रोत पर आयकर कटौती	838.00
		साविध जमा	139,448,529.00
		समापन शेष	
		हस्ते रोकड़	1.00
		बैंक में नकद	<u>7,637,490.00</u>
			<u>7,637,491.00</u>
	<u>156,673,549.00</u>		<u>156,673,549.00</u>

समदिनांकित हमारी पृथक् रिपोर्ट के अनुसार /

कृते- संजीव राजीव एण्ड कं०

चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स

ह०/—

(संजय भूटानी)

कृते- उ०प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड

ह०/—

(पवन कुमार)

सचिव

लखनऊ

दिनांक: 24.05.2012

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, लखनऊ

दिनांक 31.03.2012 को समाप्त हुए वर्ष हेतु आय-व्यय लेखा

व्यय	धनराशि	आय	धनराशि
बेची गई पुस्तकों का लागत मूल्य	51,029.00	राज्य सरकार से	2,500,000.00
वेतन एवं भत्ते	407,692.00	केन्द्रीय सरकार से	<u>950,000.00</u>
कार्यालय किराया	1,304,349.00	दान (चंदा) एवं विज्ञापन प्राप्तियां	1,036,500.00
बिजली, ऊर्जा एवं ईंधन	140,625.00	सावधि जमा पर ब्याज	12,853,483.00
स्टॉफ वाहन	778,556.00	बचत खातों पर ब्याज	231,801.00
टेलीफोन और इंटरनेट	119,964.00	विविध प्राप्तियां	685.00
परियोजनाओं, अनुसंधान, डाटा संग्रह और प्रलेखीकरण	4,392,613.00	पुस्तकों का विक्रय	65,700.00
पब्लिक आउटरीच प्रोग्राम हेतु डीएफओ गोरखपुर	270,000.00		
चालू पी.बी.आर. किया कलाप	147,242.00		
जैवविविधता जागरूकता कार्यक्रम	17,468.00		
वेब साइट रखरखाव	30,000.00		
कम्प्यूटर चालन एवं रखरखाव	67,659.00		
लेखाकन प्रभार	13,500.00		
लेखा परीक्षा फीस	24,302.00		
कार्यालय व्यय	52,958.00		
पिकप वेलफेयर सोसाईटी को संदत अनुरक्षण व्यय	36,180.00		
अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस-2011	879,056.00		
समाचार पत्र और पत्रिकायें	6,888.00		
डाक / कूरियर	9,277.00		
बोर्ड एवं अन्य बैठकें	58,043.00		
जनशक्ति आपूर्ति	1,83,792.00		
कार्यालय स्टेशनरी	22,626.00		
वार्षिक रिपोर्ट एवं ब्रोशरों की तैयारी	2,37,891.00		
बैंक प्रभार	26,488.00		
आकस्मिकता	18,920.00		
मूल्य हास	140,071.03		
व्यय से ऊपर आय की अधिकता	8,201,000.87		
	<u>17,638,170.00</u>		<u>17,638,170.00</u>

समदिनांकित हमारी पृथक् रिपोर्ट के अनुसार /

कृते- संजीव राजीव एण्ड कं०
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स
ह० / -
(संजय भूटानी)

लखनऊ
दिनांक: 24.05.2012

कृते- उ०प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड
ह० / -
(पवन कुमार)
सचिव

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, लखनऊ

तुलन-पत्र दिनांक 31 मार्च, 2012

दायित्व	धनराशि	आस्तियां	धनराशि
पूँजी निधि		स्थिर आस्तियां	
अग्रणीत अतिशेष	140,847,959.45	सूची अनुसार	928,871.00
जोड़ें: वर्ष हेतु सरप्लस	<u>8,201,000.87</u>		
	149,048,960.32	चालू आस्तियाँ	
जोड़ें: यू.पी.एस.आई.सी. के अंतिम प्राक्कलन के अनुसार स्थिर अस्तियाँ को अंतरित धनराशि	<u>173,698.00</u>	स्त्रोत पर आय कर कटौती	330,905.00
		प्रतिभूति जमा किराया	275,835.00
		पुस्तकों का स्टॉक	373,079.00
		2011-12 कर कटौती	838.00
		जमा किया गया आयकर	227,109.00
		समापन अतिशेष	
		हस्ते रोकड़	01.00
		बैंक में नकद	7,637,490.00
		सावधि निक्षेपों में	<u>139,448,529.00</u>
			147,086,020.00
			<u>149,222,658.32</u>
	<u>149,222,658.32</u>		<u>149,222,658.32</u>

समदिनांकित हमारी पृथक् रिपोर्ट के अनुसार /
कृते— संजीव राजीव एण्ड कं
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स
ह०/—
(संजय भूटानी)

कृते— उ०प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड
ह०/—
(पवन कुमार)
सचिव

लखनऊ
दिनांक: 24.05.2012



आंचलिक विज्ञान केन्द्र में लीप डे पर आयोजित कार्यक्रम में मेढ़क कूद प्रतियोगिता में भाग लेते बच्चे

एमफीबियन संरक्षण के प्रति लोगों को किया जागरूक

लखनऊ, 29 फरवरी (सं): सूरज के धारी और जब पृथ्वी प्रति सेकंड चक्कर लगाती है तब कहीं जाकर हर चौथे वर्ष लीप डे होता है। और इसी लीप डे को लेकर मेढ़क जो कि एक एम्फीबियन (उपचर प्राणी) है और जिसको कई प्रजातियां अलग (फ्रॉग), अनोटा (टोड), कैडडटा (न्यूटन), कैडडटाटा (साममैण्डर), और गायफोनीया (सेकैनस) रूप को लीप डे के मेढ़क विज्ञान प्रजातियों की उन्नत होती जा रही है। क्योंकि चाहे अब शहर हो या गांव हर जगह नये मिनिंग को रहे है जिस जगह से इनका प्रजनन नहीं हो पा रहा है। 'लीप डे' यानी एक छतरी जो कि मेढ़कों को समर्पित किया गया और इस विषय को लेकर प्रचीन विज्ञान संस्थान, लखनऊ, विचारविधायक, आंचलिक विज्ञान नगरी, उत्तर प्रदेश जैव विविधता बोर्ड और जू आउटरीच संस्था और एम्फीबियन



लीप डे पर आयोजित हुए विविध कार्यक्रम

(उपचर) नेटवर्क, दीक्षा पुराण भोगपुर में आंचलिक विज्ञान केन्द्र अलाइन में कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों और समाज के मध्य एम्फीबियन संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करना रहा है। जिसको लेकर एम्फीबियन विषय पर अध्यापक हरि मोहन (संयोजन पुरस्कार) 200 से अधिक गमलेट छात्र-छात्राओं को शिक्षित किये गये। कार्यक्रम में क्विज प्रतियोगिता

स्लोगन राइटिंग प्रतियोगिता, छान मेढक कूद (लीप), कला प्रतियोगिता और पत्रल प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें राजधानी के कई स्कूलों ने भाग लिया। प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी में छात्रों के नाम अर्ह प्रतियोगिता

अश्वीष कुमार कनकाकर (प्रथम पुरस्कार) जवाहर नवोदय विद्यालय (कक्षा 8) मानसी सिंह (द्वितीय पुरस्कार) जवाहर नवोदय विद्यालय (कक्षा 7) स्लोगन प्रतियोगिता अनुराग (प्रथम पुरस्कार) जवाहर नवोदय विद्यालय (कक्षा 7) कोनाक केशव (द्वितीय पुरस्कार) रानी लक्ष्मी बार्द विकास नगर (कक्षा 7) कृपा सिंधु (तृतीय पुरस्कार) जवाहर नवोदय विद्यालय (कक्षा 2) हरि मोहन (संयोजन पुरस्कार) सरस्वती विद्या मंदिर (कक्षा 8) वशिष्ठा डी (संयोजन पुरस्कार) लखनऊ पब्लिक स्कूल (कक्षा 5)

क्विज प्रतियोगिता मुहम्मद आयान (प्रथम पुरस्कार) जवाहर नवोदय विद्यालय (कक्षा 8) मानसी सिंह और पूजा मिश्र (द्वितीय पुरस्कार) (कक्षा 7) सचिन मिश्रा (तृतीय पुरस्कार) अरब कालीचंद (कक्षा 8) पत्रल प्रतियोगिता काजल, दीपशि, कोमल और आकाश (प्रथम पुरस्कार)

एलएलएम माप्टेसरी स्कूल वर्षा, मिर्जापुरा, कोपल और पूजा (द्वितीय पुरस्कार) एलएलएम माप्टेसरी स्कूल विरा, ओकाश, शिखा और पवन (तृतीय पुरस्कार) एलएलएम माप्टेसरी स्कूल मेढक कूद प्रतियोगिता रवि पाण्डेय (प्रथम पुरस्कार) लखनऊ पब्लिक स्कूल (कक्षा 5) विक्रम (द्वितीय पुरस्कार) लखनऊ पब्लिक स्कूल (कक्षा 5) शक्ति (तृतीय पुरस्कार) लखनऊ पब्लिक स्कूल (कक्षा 5)

लीप डे पर स्लोगन प्रतियोगिता

लखनऊ | निज संवाददाता

लखनऊ। शहर में पहली बार लीप डे आयोजित किया गया। जू आउटरीच ऑर्गनाइजेशन, उत्तर प्रदेश स्टेट बायोडाइवर्सिटी बोर्ड, एमफीबियन नेटवर्क ऑफ साउथ एशिया एएनएसए कोयम्बटूर तमिलनाडु और लखनऊ विश्वविद्यालय के जन्तु विज्ञान विभाग की ओर से बुधवार को आंचलिक विज्ञान नगरी में लीप डे मनाया गया। इस दौरान मेढ़क व टोड सहित एमफीबियन प्रजाति के सभी छलांग लगाने वाले जीव जन्तुओं के जीवन चक्र और अन्य महत्वपूर्ण जानकारी दी

गई। कला, क्विज, पत्रल, फ्रॉग लीप व स्लोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में एमएलएम माप्टेसरी स्कूल, एलपीएस, सरस्वती विद्या मन्दिर, आरएलबी स्कूल व जवाहर नवोदय विद्यालय सहित कई स्कूलों के कुल 562 छात्र छात्राओं ने हिस्सा लिया। कला प्रतियोगिता में आशीष कुमार कनौजिया व मानसी सिंह, स्लोगन प्रतियोगिता में अनुराग व कोनक केशव, क्विज में मोहम्मद आयान व मानसी सिंह, पत्रल प्रतियोगिता में काजल व वर्षा और फ्रॉग लीप प्रतियोगिता में रवि पाण्डेय व विक्रम को क्रमशः प्रथम व द्वितीय पुरस्कार मिला।

4 डेली न्यूज़ लखनऊ, गुरुवार, 1 मार्च 2012

प्राणि संरक्षण के प्रति किया जागरूक

डेली न्यूज़ नेटवर्क
लखनऊ। लीप डे के अवसर पर राजधानी के आंचलिक विज्ञान नगरी में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें छात्रों को एम्फीबियन (अभयचर) प्राणि संरक्षण के प्रति जागरूक कराया गया। मेढ़क की कूद को लीप कहते हैं जिसके सहारे वह अपना रास्ता तय करता है। यह कहना है लविवि की प्राणि विज्ञान विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर अमिता कनौजिया का। उन्होंने बताया कि प्रोग्राम के दौरान आयोजित क्विज में लगभग 120 प्रतिभागी

सम्मिलत हुए। 150 स्लोगन राइटिंग में, 75 छात्रों ने कला में और 50 से अधिक

- लीप डे पर हुए विविध कार्यक्रम
- उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले हुए पुरस्कृत

छात्रों ने मेढ़क कूद में भाग लिया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को पुरस्कृत किया गया। कला प्रतियोगिता में आशीष कुमार, मानसी सिंह, सृष्टि नायक, स्लोगन

राइटिंग में अनुराग, कोनाक केशव, कृपा सिंधु, हरिमोहन, वर्षिता श्रीवास्तव, क्विज में मोहम्मद आयान, मानसी सिंह, सचिन मिश्रा, मोहम्मद आकिब खां, मेढ़क कूद में रवी पाण्डेय, विक्रम, शशी को सर्टिफिकेट प्रदान किया गया। कार्यक्रम के आयोजन में लविवि प्राणि विभाग, उत्तर प्रदेश जैवविविधता बोर्ड, जू आउटरीच संस्था तमिलनाडु की अहम भूमिका रही। वहीं चिडियाघर में भी सुबह से ही बच्चों के आने जाने का सिलसिला चलता रहा जिसमें कुछ छात्र अध्यापकों के साथ और कुछ अपने माता-पिता के साथ आए।

'जंगलों से पूरी न करें अपनी रोजमर्रा की जरूरतें'

लखनऊ, 22 मई (संवाद सूत्र) : जंगलों के कटने और वन्य जीवों को उचित संरक्षण न मिलने से पारिस्थितिकी तंत्र बिगड़ता जा रहा है। इस समस्या पर लगाम कसने के लिए शुरुआत वन विभाग को मुसौदे कराने से होगी, क्योंकि जंगलों को संरक्षित किए बगैर जैव विविधता का संरक्षण असंभव है। इसके लिए वन विभाग के कर्मचारियों को आधुनिक संसाधन उपलब्ध कराये जाएंगे।

यह बात रविवार को जैव विविधता दिवस के अवसर पर वन एवं जन्तु उद्यान मंत्री फतेह बहादुर सिंह डॉ. राममनोहर लोहिया विधि विश्वविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि वन विभाग में फ्रंट लाइन स्टाफ (वन रक्षक) के कई पद रिक्त हैं। इन्हें भरे जाने के निर्देश प्रमुख सचिव वन और वन संरक्षक को दिए जा चुके हैं। साथ ही इससे संबंधित प्रस्ताव राज्य सरकार को दिए जाने की तैयारियां हैं। इस प्रस्ताव में वन क्षेत्रों में आवश्यकताओं को प्रमखता से शामिल किया जाएगा। साथ ही राज्य सरकार से आर्थिक मदद भी मांगी जाएगी। संगोष्ठी में इंडियन फॉरेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त पद्मश्री पीके सेन ने कहा कि पौधरोपण द्वारा जैवविविधता को दोबारा नहीं प्राप्त किया जा सकता। लिहाजा जंगलों को संरक्षित करना हमारा कर्तव्य

संगोष्ठी

- वन विभाग की सतर्कता बिना जैवविविधता संरक्षण असंभव
- मंत्री ने कहा, विभाग में भरे जाएंगे फ्रंट लाइन स्टाफ के पद

हैं। पारिस्थितिकी तंत्र में सभी एक दूसरे के पूरक हैं। वन्य क्षेत्र की वनस्पतियों के साथ वन्य जीवों का संरक्षण भी जरूरी है। कार्यक्रम में प्रमुख वन संरक्षक डीएनएस सुमन ने लोगों को संबोधित किया। यहां राज्य जैव विविधता बोर्ड के अध्यक्ष चंचल कुमार तिवारी, डॉ. राम मनोहर लोहिया विधि विश्वविद्यालय के कार्यकारी कुलपति सीएल जरीवाल, सेंटर फॉर इकोलॉजिकल साइंसेज बेंगलूर के अध्यक्ष व प्रोफेसर डॉ. रमन सुकुमार, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के निदेशक डॉ. संदीप त्रिपाठी, जूलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के निदेशक डॉ. के. वेंकटरमन और बाटैनिकल सर्वे ऑफ इंडिया के निदेशक डॉ. डीके सिंह समेत अन्य लोगों ने परिचर्चा में हिस्सा लिया।

प्रदेश में केवल 9.8 प्रतिशत भूमि पर बचे जंगल : राज्य जैव विविधता बोर्ड के सचिव पवन कुमार ने बताया कि प्रदेश में केवल 9.8 फीसदी जमीन ही जंगलों के



आंचलिक विज्ञान केन्द्र में लोगों को पौधों के बारे में बताते विशेषज्ञ

रूप में है। बढ़ती आबादी से जंगलों का अस्तित्व खत्म हो रहा है। मध्यप्रदेश के प्रमुख वन संरक्षक डॉ. पीबी गंगोपाध्याय ने कहा कि लोग अपनी रोजमर्रा की जरूरतें पूरा करने के लिए जंगलों पर आश्रित हैं। अतिक्रमण, मृदा अपरदन, जलाऊ लकड़ी की बढ़ती मांग, जंगलों में आग लगने और जंगल की भूमि को रिहायशी भूमि में तब्दील किए जाने समेत अन्य कई कारणों से जंगल कम हो रहे हैं। भारत करेगा मेजबानी : संयुक्त राष्ट्र संघ

ने 2011 को अंतरराष्ट्रीय वन वर्ष के रूप में मान्यता दी है। कांफ्रेंस ऑफ पार्टीज (सीओपी) की 2012 में होने वाली मीटिंग की मेजबानी भारत करेगा। इसमें 193 देश हिस्सा लेंगे।

94 वनस्पति प्रजातियां शामिल : कुछ समय पूर्व वनस्पतियों पर हुए शोध में 94 नई प्रजातियों को शामिल किया गया है। इससे अब वनस्पतियों की कुल 1299 प्रजातियां हो गई हैं। 10 के अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है।



आंचलिक विज्ञान केन्द्र में रविवार को जैव विविधता पर आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता में विजेता रहे बच्चे।

'वनों से संरक्षित होगी जैव विविधता'

लखनऊ। वनों के संरक्षण से ही जैव विविधता संरक्षित रह सकती है। इसलिए हमें अधिक से अधिक पौधे लगाने चाहिए। वन एवं जंतु उद्यान मंत्री फतेह बहादुर सिंह ने डॉ. राम मनोहर लोहिया विधि विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में कहा कि वन क्षेत्र, कृषि भूमि, वेटलैंड, घास के मैदान पहाड़, फसलें, गंगा यमुना के मैदान के रूप में प्रदेश में समृद्ध व विशाल जैव

अमर उजाला

लखनऊ, 23 मई 2011

विविधता है। धरती पर वनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। इसके बिना जैव विविधता की रक्षा संभव नहीं है। उधर, आंचलिक विज्ञान केन्द्र अलीगंज में आयोजित कार्यक्रम में

विशेष सचिव पर्यावरण डॉ. एसएस सिंह ने कहा कि जैव विविधता की रक्षा में वनों की प्रमुख भूमिका है। यह किसी समुदाय या राष्ट्र का मुद्दा नहीं है। हमारा देश जैव विविधता की दृष्टि से विश्व के 10 सर्वाधिक धनी देशों में है। इसी प्रकार लखनऊ प्राण उद्यान में पर्यावरण निदेशालय व जंतु विज्ञान विभाग लविवि के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस मनाया गया।

हिन्दुस्तान

वाराणसी • रविवार • 14 जनवरी 2012

नेवार मूली को बचाने की शुरु हुई पहल

जौनपुर | निज संवाददाता

जौनपुर को नेवार मूली को बचाने की पहल शुरू हो गयी है। भारत सरकार के राज्य जैव विविधता बोर्ड के वैज्ञानिक व सहायक वन संरक्षक आरके दुबे अपनी टीम के साथ शुक्रवार को जिले में पहुंचे। उन्होंने मंडी नसीब खां जाकर नेवार मूली पैदा करने वाले एक मात्र किसान विद्यालाल से मुलाकात कर मूली उत्पादन के विषय में विचार विमर्श किया। श्री दुबे ने हिन्दुस्तान को बताया कि नेवार मूली सिर्फ जौनपुर में पैदा होती है।

विद्यालाल के अनुसार उन्होंने नेवार मूली अमरिका तक भेजी है। हाल में जिले के तत्कालीन एसपी रहे आरके स्वर्णकार ने भी स्थानीय रूप से आरके दुबे मूली यहां से ले गए हैं।

श्री दुबे ने बताया कि दुर्लभ चीजें हिलाने वाली या रही हैं। किसे संरक्षित करने के लिए एक योजना बनाने की आवश्यकता पड़ रही है। जौनपुर की नेवार मूली को संरक्षित करने और किसानों को प्रोत्साहित करने की योजना बनायी जा रही है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड के माध्यम से ऐसी दुर्लभ चीजों को संरक्षित करने के लिए केंद्र सरकार को जानकारी दी जाएगी। विश्वविद्यालयों में इस पर शोध भी कराया जाएगा। श्री दुबे ने बताया कि नेवार मूली पर पूर्णतः निर्यातव्य के डा. डीडी दुबे

व डा. एसपी तिवारी ने कुछ काम किया है। उनसे भी बातों की गयी हैं। उन्होंने बताया कि मार्केटिंग व्यवस्था ठीक न होने और अच्छी प्रजाति का बीज न मिलने के कारण इस दुर्लभ वस्तु का लोप हो चला है। इस पर शोध के लिए प्रोजेक्ट दिया जाएगा। जिले की मूली प्राचीन समय से अपने विरासत के लिए जानी जाती है।

संरक्षण

- राज्य जैव विविधता बोर्ड के वैज्ञानिक पदों में
- मंडी नसीब खां निवासी किसान विद्यालाल से की जाती
- दुर्लभ चीजों को संरक्षित करने की चल रही योजना : आरके दुबे



नेवार मूली को दिखाते किसान विद्यालाल व उद्यान विभाग कर्मचारी • हिन्दुस्तान



XI Conference of Parties
CONVENTION ON BIOLOGICAL DIVERSITY
HYDERABAD INDIA 2012

उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड

तृतीय त, ए ब्लॉक, पूर्वी विंग
पिकप भवन गोमती नगर, लखनऊ-226010
फोन: 0522-4006746, 2306491

ईमेल: upstatebiodiversityboard@gmail.com, वेबसाइट : <http://upsbdb.org>